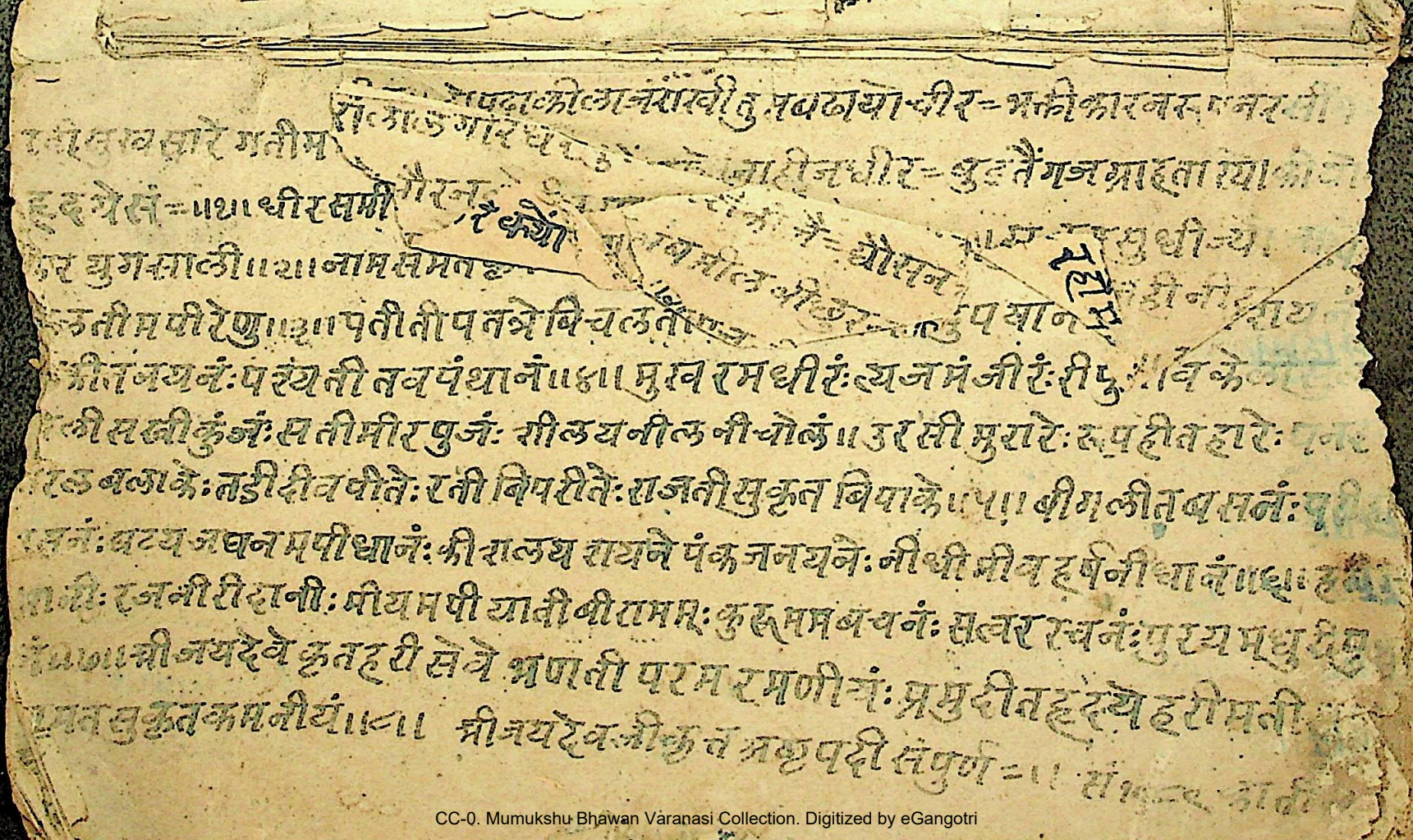

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरसमीरे यमुनातीरे वसतिवने वनमालीः गोपीपीनपयोधरमर्दनचंच
करयुगशाली ॥२॥ नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुः बहुमनुते ननुते तनसंगतपं
कृतिमपीरेणु ॥३॥ पतीनीपतत्रेविचलतीपत्रेः शंकितभवदुपयानैः रचयति शय
नीयनयनैः पश्यति तवपंथानं ॥४॥ मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रीपुमिवकेलि
लोलं सखीकुंजं सतिमिरपुंजं नीलयनीलनिचोलं ॥ उरसी मुरारेः उपहितहारेः घन
इव तरलबलाकैः तडीदिवपीतैः रतीविपरीतैः राजतीसुकृतविपाकैः ॥५॥ वीगलीतवसनं परि
रंभणं सदयजघनमपीधानं किसलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्षनिधानं ॥६॥ हरि
मानीरजनीरिदानीं कियमपीयातीं बीतमन्युः कुरुममबचनं सत्वरचनं पुरयमधुरिपु
मिति ॥७॥ श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयं प्रमुदितहृदयं हरिमति
मनसुकृतकमनीयं ॥८॥ श्रीजयदेवकृतं अष्टपदी संपूर्ण ॥ ॥ तं [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति सुरनरकृष्णस्तुताः ॥

अहं हरे तव पादैकमूल दासानुदासो भवितास्मि भूय: ॥ मनःस्मरेतासुपतेर्गुणांस्ते गृ
वाक् कर्म करोतुकाय: ॥१॥ ननाकपृष्ठं नचपारमेष्ठ्यं न सार्वभौमं नरसाधिपत्यम् नःयोग सि
द्धिरपुनर्भवंवा: समञ्जसात्वा विरहीज्यकांक्षे= ॥२॥ अजानपक्षा इव मातरं खगा: स्तन्यंयथावत्सतरा
क्षुधार्ता: । प्रियंप्रियेवव्युषितं विषण्णामनोऽरविन्दाक्ष दिदृक्षतेत्वाम ॥३॥ ममत्तमश्चोक जनेषु स
संसारचक्रेभ्रमतः स्वकर्मभिः त्वन्मायया त्मजदारगेहेष्वासक्तचित्तस्य नःनाथ भूयात् ॥४॥

॥ बादरायणेः हरीवंशजीकी परीक्षाकी= ॥

यंनरेन्द्र दिविजेन्द्र सुरेन्द्र ब्रह्मा= नागेन्द्रशंभु निरिजेन्द्र दिनेन्द्रतुल्या= सर्वे समान वयस
कीलकालगृस्ता= तस्माद्भजस्वः हरिपादसरोजगंधम् ॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंसरीबजाई आज रंगसे मुरारी ॥ सीवसमाधीभुलगये: मुनीमनकीतारी: बेदपढ
ब्रम्हाभुले: भुलेब्रम्हचारी: सुनतहीआनंदभयो: लगीहैकरारी: रंभासबताल चुको: भ
नृत्यकारी: जमुनाजलपलटबहै: सुधीनासम्हारी: भाबृंदावनबंसीबजी: तीनलो
गारी: ग्वालबाल मगनभये: बृजकेनरनारी: सुरकीरोर मदनमोहनके चरन
बलीहारी: ॥=॥ प्रीतमजानलेहू मनमाही ॥ अपनेसुखसों सबजगबंधे: को
कोनाहीं: सुखमेंभायसबही मीलबैठत: रहतचहूंदीसघेरे: बीयतघडीसबहीसंग
छोड्यो: कोउनआवतनेरे: घरकीमार बहूतहीत जासुं: सदा रहत संगलागी: जक
देंसतजीयहकाया: प्रेतप्रेतकर भागी: याबीधकोसंसार बन्योहै: जासु नेहलगा
आनकाढनीकर नानकजी हरीबीनकामन आयो ॥=॥ कहावत ऐसैस्वा
प्यारदारयदीयेसुदामा: गुरुकेसुतदीये आन: बीप्रीक्षण कोलंकदीनी: प्रेमप्रीत
णकेदसमस्तकछेदे: दृढगहीसारंगपान: प्रल्हादको नीजकृपाकीनी: सुरपतीकी
हासपरबोहोतनीठुरता: नैननहंकी हान=कहावतएसेत्यागीहोनू ॥=॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुकुटके=तंगनीपर=ईंद्रको धनुषवारों=अमलकमलवारों=लोचननीसालपर=
कुंडलीप्रभापें कोटीक=प्रभाकर=वारों=कोटीक=मदन=वानो=वदन=रसालपर
तनके=वरनपें नीरद=सनलवारों=चपलाचमकी=मनमोहनकी=मालपर=
चालपें=मराल=वारों=मेरो=तनमन वारो=कहाकहा=वारीं=डारूं=नंदजीकेलालपर

॥ भोलेबाबा ॥

इश्वर चर्चा कीजीये = कीजेइश्वरनाम = धरीयेईश्वरध्यान नीत्त=कीजेहरीहीत्त=क
कीने हरीहीत्त काम=चीतनीरमल करलीजे=सबसेमनको मोड=इसमेलय करदीजे=
भोला=ईश्वर सत्य=वीश्व शोकाकुल=नश्वर=आशा=वीश्वकीछोड=नीत्य=सास्वत=भ

॥ ईश्वर ॥ ॥ पढे गुने भाई बहीन= पाँचः पंचः संवाद ॥

॥ भोला ईस प्रसादते= चढे मुक्तीः प्रसाद ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनमेरहीनाहीनठोर॥नंदनंदनअच्युतकैसेआनीयेउरभोरः सोसजागतवतगीतवतः
पनसोवतरातः हृदयतेवामदनमुरतः छीननहितउनजातः कहतकथाअनेकउघोःलोकलो
हीरवायः कहाकरहीहीत्तप्रेमपुरनः घटनसिंधुसमायः श्यामगातसरोजआननः लली
उरसहासः सुरएसैसपकोयेमरतलोचनप्यास॥लोचनरहैबैरीहोय॥जान्पुछअ
लीनौःदीयेभुयमैगोयः अवगतीजोतेरीगतीनाजानुंःरह्योजागतसोयःसबैरूपकैअव
रःनीकसगयेढीगहोयःकर्महीनहींपायहीराःदीयोपलमेखोयःतुलसीदासमीरा
रैकहोकैसीहोयः॥बरनोअवधगोकुलग्राम॥उतबिराजतज्यानकीबरःदीतहीरघा
श्यामःउहांसरजूबहतअद्भुतःइहांजमुनानीरःहरतकलीमलहोऊमुरतःसकलजनकी
पीरःमणीजटतसीरक्रीटराजतःसंगलक्ष्मनीबालःमोरमुकटरबैनकररह्योंःनीकटह
लधरग्वालःउहांखेवटसखातारेंःबिहसीकैरघुनाथःइहांवृंगनंदुनाथतारयोःकृपगही
नीजहातःउहांसीवरीस्वर्गदीनौंःसीतसागररामःयहांकुबजालाय्यचंदनकीयेपुर
कहीतश्रीरामकृष्णजोःधरयोनरअवतारःदासतुलसीदोऊआसाःकोऊकवरं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= भक्त = कबीर कहते हैं =

रमीलावे चंद्रको = चंद मीलावे सर ।। येही भेद जीन जानीया = ताही मीलाए सरपुर ।।
नापवन पर चंदा बसे = ताहीन ग्रासे काल ।। जो यह भेद हो जानही = सोही जोहरी लाल ।।
पानी मे पावक बसे = अतीधन बरसे मेह ।। तीनो अधर अकास है ।। कौन पवन को देह ।।
ग्रंथी हरी उस नाम की = जीन की दया से ली ह = जो यह भेद बतावही = सीस अरपी तेही दीन
स्वास स्वास पर सुमरन लागा = कहै कबीर भीषय सब भागा =
अगर है सौख मीलने का = तो = हर रम लौ लगाये जा =

॥ नानक साब कहते हैं ॥

नाम उपदेश संयम इंद्रीय को = जाप सो अजपा जा पै = सदा रहै कंचन सी काया = काल न कबहूँ खा

॥ दरीया साहब कहते हैं ॥

नाम ही जपे शुन्य मन धारै = पांचो इन्द्रीयां बस मे करे = ब्रह्म अगन मे होमे काया = ताका वी
पखारे पाया = जीन खोज्या तीन पाईयाँ = गहरे पांनी पैठ = हो बौरी बूडन डरी = रही कीना
बैठ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ गोविन्दाष्टकं ॥

सत्यं ज्ञानमनंतं नित्यमनाकारं परमाकारं=गोष्ठप्रांगणरिंगण:लोलमनायासंपरमा
म्॥ मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारं॥ क्ष्मामानाथमनाथं प्रणमत गोविंदं प
नंदम्॥ मृत्स्नामत्सीहेतीयसोदाताडनरौरवसंत्रासं॥ व्यादितवक्त्रालोकीतलोका
नुदरालोकालंम्॥ लोकत्रयपुरमुलस्तंभं लोकालोकमनालोकं॥ लोकेशं परमेशं
नगोविंदं परमानंदम्॥ त्रैविक्रमपरिपुवीरघ्नं स्थितीभारघ्नं भवरोगघ्नं कैवल्यंनव
रमनाहारं भुवनाहारम्॥ वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभासं॥ शौरिं के
शांन्त प्रणमत गोविंदं परमानंदम्॥ गोपालं भुलीलाविग्रह गोपालं कुलगोपालं॥
गोपीखेलनगोवर्धनधृतिलीलालालीतगोपालंम्॥ गोभीर्निगदितगोविन्दस्फुटना
मानं बहुनामानं गोपीगोचरदुरं प्रणमत गोविंदं परमानंदम्॥ गोपीमंडलगोष्ठ
भेदं भेदावस्थमभेदाभं॥ राध्रद्धेश्वरनिधुतोत्कुलधुलीधुसरसौभाग्यं॥ श्रद्धा
ग्राह्यानन्दमचिन्त्यंचिन्तितसद्भावं॥ चिन्तामणीमहीमानं प्रणमत गोविंदं परमानंदम्॥
मान्यकुलयोषीद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं॥ व्यादित्संन्नीरथदिग्वस्त्राद्युपरानुग्रा
न्तंम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीचे पीये मैं आराकारा हमको कीस की साकीया चौरी ।।

।। खुदा की गर नही चौरी तो फीर बंदे की क्या चौरी ।।

।। नकाराम की कहावत ।।

प्राणीया एक बीज मंत्र उचारी प्रतीदीनी रामकृष्ण म्हणकां मूरारी

देची साधन रे तूझ्या सकल सीद्धी चे नाम उच्चारीदे गोपाळाचे वाचे

कपास पारणे नव्हगे वनसेवन नलगे धूम्रपान पंच अग्नी सेवन

खाचे फुकाचे काही नवचे भाडार कोटी यज्ञ परीसीरा तूका म्हणे हे सार

वाजतसे ढोल कोणी नायकती कानी रामनाम नम्हणे याची थोर साली हानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निधुतद्वय शोक विमोहं बुद्धं बुद्धेरप्यन्तस्थं ॥ सत्तामात्र शरीरं प्रणमत गोविन्दपरमानन्द
कान्तं कारण कारण मादी मनादिं काल मनाभासं ॥ कालीन्दिं गत कालीय शीरसी मुद्
न्तं सुनृत्यन्तम् ॥ कालं काल कलातीतं कलीता शेषं कलीदोष घ्नं ॥ काल त्रय गतीहे
गमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ वृन्दावन भुवी वृन्दारक गण वृन्दाराधीत वन्देहं ॥ कु
मल मन्द स्मेर सुधानन्दं सुहृदानन्दम् ॥ वन्द्या शेष महामुनी मानस वन्द्यानन्द प
दं ॥ वन्द्या शेष गुणाब्धिं प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ गोविन्दाष्टक मेतद धीते
विन्दार्पित चेताय गोविन्दाच्युत माधव विष्णो गोकुल नायक कृष्णेति ॥ गोविन्दां
घ्रि सरोज ध्यान सुधाजल धौत समस्ताघो ॥ गोविन्दं परमानन्दामृत मन्तर्यं स समभ्ये

॥ इति ॥

ध्याये नीत्यं महेशं रजत गिरि निभं चारु चन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशु मृग
वराभीति हस्तं प्रसन्नं पद्मासीनं समन्तात्स्तुत ममर गणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिल भय हरं पञ्च वक्त्रं त्रिनेत्रं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीधतर्यो तूमरे करसो ऋसी नारीतरी तव चरण सहारे= कैवटपार भयो छीनमें=भवसागर सो प्रभु
पार उतारे= कोई तर्यो करसो पगसो=पुनी कोई तर्यो द्रगनेक नीहारे= साँची कहो कछू जानत हो
कीतनी बीध सो कीतने तूम तारे= अंगुरीपै गीरीराज उठायजु=गोकुल गोपीन ग्वाउ उबारे
चौंवरी-चारी चुरावतही तीन= ~~तत्तसो रंक~~ सो राव बनावनहारे= धायब-चायब कीयो गजरा
नहीं: आपतीमें हरीनाम उचारे= तेमही तो गीनजा सके=नहीजात गीनेजीतमें तूम तारे=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपरसीकमोहनमनोजमनहरणसकलगुणगरबीले॥ छैलछबीले चपललोचन च
रचीत्तचटकीले॥: रतनजटीतसीरमुकुटलटकरही सीमीटस्यामलटघुंघ
वालबिहारीकन्हयालाल चतुरतेरीबलीहारी॥१॥ मोलकमोतीकानकपोलन
कुबनीनीरमलप्यारी= जोतीऊजारीहमेहरबारहरदादेवोगीरधारी॥२॥ दंतछ
जुघटामुखनीरसवसरहससीसरमीले॥ छैलछबीले॥ मंदहसनमृदुबचनतोतरे
सोरभोलीभाली=करतचोचलेअमोलकअधरपीकरचरहीलगलीं= फुलगुला
रीबूकसुंदरतां:रचीरकुंडलछबीबनमाली=करसरोजमेबंदरमेहेदीअमंदबहु
तीपालीं=फुलछडीसीनरमकमरकरधनीसब्दसुनतूरसीले॥छैलछबीले॥संगु
लीझीनजरीपटकछनीस्यामलगातसुहातभलेःवालनीरालीचरनकोमलपंकज
केपातभले=पगनुपरसणकारपरमउत्तमजसुहाके तातभले=संगसखनकेनीकट
नमुनावछरानचरातभले=ब्रजयुवतीनकेप्रेमभोरभये घरघरमारवनगटीले
छैलछबीले॥ गावेरासबीलासःचरीतहरीःहरसःरेनःहरसरासकरे=मुनीजनमोहे:
कृष्णकंसादीकखलक्रोनाराकरे=गीरधारीमाहाराजसदामीबृंदावनमेबासकरे=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~मनकीमनहींमाहींरही~~ ॥ कबीरसाबका भजन=

मनकी मन हीं माहींरही॥ नाहरीभजेनःतीरथसेये चोटी कालगही=दारा मीतपुतरथ संपती धनजनपुर्णमही = सकल साजयह मीथ्याजानो=भजना राम सही=फीरतफीरतबहूतेजगहारयो मानुषदेहलही=नानक कहतमीलनकी बरीयाँ सीमरतकाहेनही=

॥ हमारे रामनाम व्योपार=नामकोबस्त्र नामकोगहना=नामहीयाकोहार=नामहीं मंदीर नाम खजान नामहीकीटक सार= रामनामकीलगीहै हटीया=नामहीको=व्योहार॥ लेनाहोसोलेलेभाई नबहूँदेखबीचार= राधेसत्तगुरूयतनबताया=रामनाम=रूजगार॥ कौडीलगेनःपैसा ाई पुर्णरहै भंडार=॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरी चरीतको श्रवननमें सुनसुन = तभी मनमे अभीलाशा करे = हात जोडकर ~~कहैमस्त~~
करे बीनती: नारायन् हीउदर हीले = छेक छबीले =

॥ सवैया श्रीकृष्णका ॥

मधुरी हँसान की = डाडीम् दरान की = पीयरे वरान की = कुंजर गमन की = खंजन् नयन
लोकी उवयन की = मुर्ति मयन की = मदके समन की = वानंद नंद की = सुखमा सदन
द्रमाबदन की = दारीद दमन की = झाकी मदन की = बाधा हरन की = आधार मन
धार मन की =

॥ कवीत्त ॥

नहे कुरे नानामत सुनें तुं पुरानन कूं: तेरी कहा मुढ गुढ मती पंग की = वेदके विवाद
कों: पावे गो न पार कहूं = जडी देहूं धारा: सब दान न्हान गंग की: ओर सी छोरा साधे:
अबनागर न सीछी कछू: मानवेहूं मेरी कहीं: बारता सुढंग की = जा गोबन ओर
मनको रंगायलेवे: बृंदावन: रैनर चीं: गौदरयाम: रंग की =

श्रीहे सदैवं: मन सुंदराणी = श्रीकृष्णस्य: नामस्य: मनोहराणी =
श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे: हे नाथ नारायण वासुदेव =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ मेरागोपालगीरधारी=जमानेसेनीराला है:॥ सलोनाहै रसीलाहै=नःगोराहै:नःकाला है॥ कभी सुपनेमेंआजाना॥कभीरूपोराहोजाना=यहतरसानेका:मोहननेनीराला दबनीकालाहै=तूम्हें मैंभुलतोजाऊँ=मगर भुलेनहींबनता=तूम्हारी ~~सूरतने~~ सांवरीसू रतने=कुछजादुगाडालाहै=ईसीमें लूत्फ़है=रूठेरहो तूम=ओरमैंतडपूं=ईसीदीनके लीये दीलको=बडेनाजोंसे पालाहै=मजेसेदीलमेंआबैठो=मेरेनैनोंमें रमजावो हमनःगोपालमंन्दीरहै=तूम्हारादेखाभालाहै=बंधेउखलसेकंरागरी=कं ज्ञोंमें जाखेले=तूम्हारीबाललीलाने=अजबधोखेमेंडालाहै=तूम्हें मूझसेंहज्ञ है=मगरमेरेतूम्हींतूमहो=तूम्हींसोचो हमारीऔर=कोई=सुननेवालाहै=मव मोहन श्रीराधारमण=बेकलसेरूठेहैं=बडाअच्छा कीयाहै खूब=प्रणभक्तोंका

॥लाहैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= कबीर =

आय आय जाहीं क्रोड क्रोड के अजान नर पावत न बस्तु रहे नीरी अरु न्यारे
संत मन मानी कूं हरीत नील पीत श्वेत ज्यों ज्यों मीले धुरमे त्यों क्रांती भा
री जु रींस रींस न तीन्हे उर धारत सुजान एक मैतो मती मेरी
गर पै वारी जु काहू को न सुझे तो न सुझे है प्रकाशमान बुन्दावन
स्वामी नृ जोहरी बिहारी जु ॥

॥ श्री दत्तात्रेय जी का मुळ मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय स्मरण मात्र संतुष्टाय महा भय निवारण
य महा ज्ञान प्रदाय चिदानंदात्मने बाळोन्मत्त पिशाचाय वेशाये ति
महा योगीने अवधुताये ति अनसुया नंद वर्धनाया त्री मूर्त्तये ति
ॐ ॥ ॥ ॐ क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

॥ ये श्री कृष्ण का मुळ मंत्र है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ हरीगीतछन्द ॥

॥२॥

॥ बंधिध्यबंध्यापुत्रसम = वीचेससंज्ञाजानता =
॥ नभमें वही थलमें वही = नभमें वोही पहीचानता =
॥ सर्वत्रईश्वर देखता = नहीं देखता जो अन्यहै =
॥ ज्ञानीवही ध्यानीवही = ब्राह्मणवही जगधन्यहै =

॥२॥

॥ नहीं शत्रुकोई है नहीं = नहीं मीत्रकोई मानता =
॥ राजाभलेही रंकहो = एकसारदोनुजानता =
॥ सम प्रेमरखतासर्वसे = नहीं रागहै नहीं द्वेषहै =
॥ योगीयतीसच्चावही = ब्राह्मणवही ईश्वरेशहै =

॥३॥

॥ रूपकाकरताश्रवण = जीवतत्वकाकरतामनन =
॥ ताउसीकाध्याननीत = केवलउसेकरतानमन =
॥ चीत्तनीश्चलभावहै = दुजानहीकुछकामहै =
॥ पंडीतवही मौनीवही = ब्राह्मणवही नीष्कामहै =

॥४॥

॥ श्रुतीभगवतीहै मातु = सद्गुरुवाक्यरक्षकतातहै =
॥ समता सरलताबहीनदो = यमनीयमसीतरहभातहै =

॥ हरीगीतछन्द ॥

॥ धनीरानीउपरतीपलीया = सुतत्यागहै वीज्ञानहै
॥ सोहीकुटंबीहैसुखी = ब्राह्मणवही श्रीमानहै

॥५॥

॥ जोआगयासोखाक्रीया = जोमीलगयासोपीलीया =
॥ प्रथवी बीछोनाहाथतकीया = नींदआईसोगया =
॥ आकाराचादरवीमलअती = नहीउनहैनहीसुनहै
॥ त्यागीवीरागीहैवही = ब्राह्मणवही अवधुतहै =

॥६॥

॥ सुखकीनचाहीचीत्तचाहहै = नहीदुखनसे घबरायहै
॥ नीरोकचीन्तासे रहीत = नहीमोहसंनसुखभायहै
॥ तीनोअवस्थासेपरे = नहीदेहका अभीमानहै
॥ दानीअमानीहैवही = ब्राह्मणवही नीर्मानहै

॥७॥

॥ संसयनहीहै लेशभी = नहीहर्षहै न वीषाद है
॥ संगत्वमहासुखसानया = वस्तीघनीआवादहै
॥ समवीषमथलहै एकसे = नहीक्षोभमनमेंलायहै
॥ पुराणवही सुराणवही = ब्राह्मणवही कहलायहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्री कृष्ण मूल मंत्रके अंग न्यास: ॥

१) ॐ क्लीं कृष्ण यादव्यात्मने: हृदयाय नम:=
२) गोपीजन हृदयात्मने: शिरसे स्वाहा=
३) गोपीजन सुर्यात्मने: शिखायै वषट्:
४) वल्लभाय चन्द्रात्मने: कवचाय हूम्:
५) स्वाहा अग्न्यात्मने: अस्त्राय फट्=

॥ दत्तात्रेयाय मंत्र ॥

ॐ: ऐं क्रों: क्लीं: ब्लू: द्रां द्रीं
दत्तात्रेयाय ये स्वाहा:

नमो नी: मुक्तां यानो: नमो
दुग्ध बाल्क: नमो नी घृत
पी: नो नी: संज्ञीनं: मानस:

राधा: रासेश्वरी: रम्या: कृष्ण मंत्राधी देवता: सर्व
सर्वन्या च: वृंदावन: वीहारीणी: वृंदाराध्या रमाऽशो:
ष गोपी मण्डल पुजीना: सत्या सत्य परा: सत्यभामा श्री कृष्ण:
वल्लभा: वृषभानु सुता गोपी: मुल प्रकृती: ईश्वरी =
गान्धर्वी: राधिका रम्या: रुक्मणी परमेश्वरी: परात्परतरा:
पूर्णा: पूर्ण चंद्र निभानना: भुक्ति मुक्ति प्रदा नित्यं: भव्याधी वीना:
=रासे नी=

रमन्ते योगीनो यस्मीन: र
न्ते: योगीनां हृदी: तारके ब्र
ह्म रामाख्यं: रमन्तां हृदये
=मे=

नैस्तारंगधर: नै अक्षरा
नैं: मनमोहन: कुंजवी
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥८॥

नहीं बन्ध से संबन्ध कुछ = नहीं काम है कुछ कर्म से =
मोक्ष अपना धर्म ही = फीर कार्य क्या है धर्म से =
आरंभ कुछ करता नहीं = स्वच्छन्द है सुख कंद है =
कर्ता महा भोक्ता महा = ब्राह्मण वही नीरद्वंद है =

॥९॥

जीव तत्व भुमा एक रस = कारण नहीं = नहीं कार्य है =
उपदेश की है अवधी यह = जो शीष्य सो आचार्य है =
ज्ञानी से नी श्चय हूँवा = संसय रहीत नीरमुक्त है
चला सयाना है वही = ब्राह्मण वही हरी भक्त है =

॥१०॥

सुन्दर श्रुती छान्दोग्य यह = पढे सुने मन लाय =
कृपा विष्णु शीव सहज ही = जन्म मरण मीट जाय =

॥ जन्म मरण मीट जाय = अचल भुमा पद पावें =
॥ शोक मोह भय जाय = ज्ञान सुख सीन्धु समावे =
॥ भोला देख न बाह्य = दृष्टी रख नीरद्वंद =
॥ पावे पद नीर्वाण = ज्ञानी कर सुख कर सुन्दर =

॥ दोहा =

॥ देने को टूकडा भला = लेने को हरी नाम =
॥ यही सुख कर्तव्य है = रहे सदा नीष्काम =

॥ रहे सदा नीष्काम = राम का नाम उचारे =
॥ करे सभी से प्यार = सर्व मे राम नीहारे =
॥ जब हैं सबही राम = रहा फीर क्या लेने को =
॥ जय देव भज राम = त्याग ले ने दे ने को =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीराधारमणः श्रीराधारमणः श्रीराधारमणः श्राराधारमणः॥ः होसांरंगधर
रेशतूम्हीः बीचेच्चर संसय शोक समन्=मा= माया के पती मनमोहनतूमः मु
वतःभारतमानमदनःश्रीः हैं हीनानाथः दयाल्हरीः दुखभंजन हारीदेशदम
नाः हे नंन्दनंन्दन आनंद सहनः हे चंद्रवदन जीवन तन धनः मा: हे मत्तगमनः
तिमगनः ये भजन होय ज्याला तन मन=माः राधारमणः श्राराधारमणः श्री
नएव मनुष्याणांःकारणंः बंध मोक्षयोः इतोधीः कैनुकींवाच्यः मद्धयेतू
नंन तत्ः ॥ सखीरीमेरीनींदनसानीहो।। पीयाको पंथनीहारता=सबरैनबी
हानीहो=सखीयनमीलसीखदई=मनएकनमानीहो=सखी=॥ श्रीनदेखेकुल
नापरै=नीयएसीगनीहो=अंगछीनव्याकुलभई=मुखपीयपीयबानीहो=सखी
अंतरवेदन बीरहकीः वहीपीरनजानीहोः सखीः ज्यो चातकघनकोरटैः मछ
बीनपानीः मीराव्याकुलबीरहनीः सुधबुधः बीसरानीः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजनके बाद दोनु गीले हात नेत्रपर फेरनेसे नेत्ररोग नहीं होता।

॥ भरतरिजी कहते है ॥

भुक्त्वा पाणीतले धृष्ट्वा चक्षुषोर्दीयते यदि।
अचिरेणैव तद्वारि तीव्ररोगं व्यपोहती॥
त्वर्यातिश्च सुकन्याश्च व्यवनं राजमन्त्रिणौ॥
भोजनान्ते स्मरेद्यस्तु तस्य चक्षुर्न हीयते॥
अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्॥
परोपकारं पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

॥ भोगे रोगभयं कुले च्युतीभयं वित्ते नृपालाद्भयं मानेदैन्य
॥ भयं बलेरिपुभयं रूपे जराया भयं शास्त्रे वादभयं गुणे ख
॥ भयं कायेकृतान्ताद्भयं सर्ववस्तु भयान्वितं भुवीनृणां
॥ वैराग्यमेवाभयम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या गरज रही संसार से: जब लेया फकीरा बाना:। जब से भेस भीखारी धर गये=
ते पंथ नीराला कर गये= हमसे जगत: हम जगत् से मर गये: नहीं हवा परवार से:
छोड़ चुके आप परवाना= जब= जब ही हात मे लेकीया सापा= म्यार हुआ
रका सांसा= मतना करे पराई आसा= लेट्कडा घर-च्यार से= है हक्क मागके
जब= मरहुमी तकीया खाया करो= सबर की तो सक्कर बी खाया करो= चाहे
पीया पडा रहो= रहने अपने अखत्यार से= नही भुलके बाहर जाना= जब
चाहे साधू चाहे चोर बचावो= कुछ भी फीकर मनमे मत लावो= गंगा हुआ
कहे परम पद पावो= रहना अपने अखत्यार से= चाहे कुछ भी बंको जमाना=
जब= ।। सुनी सबलोक पावन करे।। प्रगटी वा भागवत की नीक मे सागर
रे= ल्याय भागीरथ सरसरी वा पुर बहरे= मुनी= तुम जो सब उर भयन
भक्ति दीपक धरे= मुनी= कृष्ण चरित्र बीचित्र रस मद प्रेम गहर भरे= मुनी
दुज मोहन के चरन नौका= रास सागर तरे= मुनी=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीनदंण्ड

वाग्दण्डोऽथ मनोदंड=कायदंड स्तथैवच=यसैते नीहीता बह्वौ त्रिदंण्डीति सऊच्यते
त्रिदंण्ड मेतन्नि क्षिप्य सर्वभुतेषु मानवः कामक्रोधौतू संयम ततः सिद्धि नियच्छति=
मनु १२।१०।११

॥ सेवा संयम साधना सत्पुरुषोंका संग॥
॥ ये चारो करनेसे व्रत=मोहनीसाकोभंग॥
दुर्लभो मानुषो देहोः देहिनां=क्षणभंगुर=॥
तत्रापि दुर्लभं मन्ये=वैकुण्ठप्रियदर्शनम्॥
॥ सत्य बराबर तपनहीं=झुठ बराबर पाप=
॥ जीनके हृदयमें साँचहै=तीनके हीयमे आप=

॥ भोजनके अन्नमे दृष्टीदोष नीवारणं
॥अन्नंब्रह्म रसो विष्णो=भोक्तादेव महेश्वरः
॥इति सचिंन्त्य भुंजानं=दृष्टीदोषो नःबाधते=
॥अंजनीगर्भ संभुतं=कुमारंब्रह्मचारीणम्=
॥दृष्टीदोष विनाशाय=हनुमंतं स्मराम्यहम्=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ उधो या ब्रज को दरा बीसारो ॥ तापीछैं यह सीखी आपनी योग कथ
बीसारो = आकार न पठये तम माधौ = सोः सोचहूं मन माही = कीतीक बी
बीरह परमारथ = नंनत हो की नाही = परम चतुर नीजदास स्याम के = संवन
कट रहत हो = जल डुबत अबलंब फ्रेम कौः फ़ीरी फ़ीरी कहा गहत हो = वह अत
लीत मनोहर आनन = कौंनै जतन बीसारो = जोग जुगत और मुक्त बापुरी
उरकी पर यारौं = नीहीं उर बसत स्याम घन सुंदर = ताहं नीर्गुन क्यों आवे
सरदास सो हीं भजन बहाऊं = जा ही दुसरौं भावै =
॥ सदसुख हरी भक्त कै माही = ॥ दूसरथ सुत और नंद नंदन की बात नीरीमें
बीतो हो = बीबोध कलेश्वर कलह कल्पना = तीनमे उपजत नाहीं = नागरी ज
ब्रम्हानंद हूतैं = भजनानंद अधीको हो = सदा = ॥ जीहीजन भक्ती सुधारस पी
त्यगेरा नसुख गेह का नः फ़ीरीमन कबहुना दीयो = बेद कल्पतरु फल माधव
जगबीष फल नही छीयो = नागरऔर संग नहीरा चैं साध संगती की यो =
नहीं जन भक्ती सुधारस पीयौ =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नगरमेघ्यं नमहेन्द्रं विष्णुं = नसवोभोमं नः रसाधिपत्यंम् : नः योगक्षीरं पुनर्भवंवा = मयापीतमे च्छतो न
क्षीनान्यत् = नीरपेक्षं मुनीशान्ता = नीवैरं समदर्शनम् = अनुगृणाम्यहं नीत्यंपुयेयेयुं धीरेणुभी =
उल्लंघ्य सीन्धों सलीलं सलीलं = यच्छोकवह्नी जनकात्मजाया = आदायतेनैव दराहलंङ्कां = नमामीतं
प्राञ्जलीराञ्जनेयंम्॥ ॥श्रीयोगी॥ भजन॥ तीहारीमहीमाजपरंपार | नेतीनेतीःनीतनिगमस्पपै
कोपावेप्रभुपार = पाहनपैपंकज बिगसावो = स्वेोअनलरसधार = मस्स्यलपैसुनीसुधासरोवर
परसावो सुखसार = अधरमछेदी धरसधुन रोपी = हरो सकलभ्रु भार = चीतेतीहारीकृपाकोर
हन गावतमंगलाचार = ॥भजनदुसरा॥ जीपीवोकाहाँमधुरमुसक्यान॥ तरसरही फीरसेयेअँखि
सुखसागररसस्वान = आकुलनैन बिलोकतचहूँदीसी = पीतांबरफहरान = पैनहीदीसतपीतांम्ब
छीनछीनतळफतप्रान = गुंजमालकीहलनीन = नैनकीवहसान = कहाकहो मनखीचलीयो
प्रीतमप्रेमनीधान = अबनःसतावहं सुरतीकरहूंनीन = जनप्रतीपालनीधान = नीमीस्वनीम
हैं जुगसमबीतत = देवोदरसकोहोन = ॥ प्रेमप्रेमसबकोईकहै = प्रेमनःचीन्हेकोय = जीसप्रेमहि
॥ हीवमीले = प्रेमकहावेसो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥बीन सतसंग मती बेढंग॥ फीरतडांवांडोल्ड मन जैं: बीनल्ड गाम तूरंग= कबहूं गी
उठत अतीश्रम बढत क्रोध उत्तंग= कबहूं सुरख भ्रमत मातूर= उपजत संग अनंग=
तप वृत दान संयम= कहा न्हाये गंग= दास नागर बीना साधन= सकल साधन मंद
मन मोहन छैल बीहारी: प्यारी सुरत पर जाउं वारी वारी=॥ सावरी सुरत का मैहुं पु
कोटी मदन छबी मुख पै वारी= मेरे साचरे सबेने गीरधारी= प्यारी= नामो के नी
तपो को घालो= सुद्ध हृदय कर मुख से बोलो= मेरे राधारमण गीरधारी= प्यारी=
मन मंदीर मे स्याम पधारे= नैनो के नीरसे चरन पखारे= कैसी सुरत बनी है प्यारी प्य
प्यारी= बंसीवजाते है कृष्ण मुरारी= संगलीये वृषभानु दुलारी= तीहारे चरन न
वे जाउं बलीहारी= प्यारी=

=सहजो बाई=

॥ एक घड़ी का मोलना= दीन का कहा बखान= सहजो ताही
॥ नरवो ईये,= बीना भजन भगवान= बैठे लेटे चालते= खान=
॥ पान: ब्योहार= जहा तहा सुमीरन करो= सहजो हीये= नीहार=
॥ सहजो= भज हरी नाम कुं= तजो जगत सुं नेह= अपना तो कोई है नही=

जै कृष्ण हरे: गोपाल हरे:
जै जै प्रभु दीन दयाल हरे=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पडे भटकतेहै लाखो मुल्ला = करोडों पंडीत = हजारों दाना = मगर खुदाको क्रीसीने जाना = खुदाको ते खुदाही जाने =

देत महेश जटा नीकसीः नःकीसीः नपसीनतें लेत हौ पाई = जैसो करोति हीः तैसो मीलैः यहराउरे बानः पुरानन गाईः पारकरो भवसागरतें करी चौगनी चाकरीः चाहौं चौथाई = लेत मल्लाह मल्ला हतें हौसो ही चाहत हौं = तूमते रघुराई ।।

जिके सदैवं भजन सुन्दराणी = नामानी कृष्णस्य मनोहराणी = समस्त भक्तांती विनाशानानी = श्री गोवींन्द दामोधर माधवेती = ।। एकनाथजी की भागवत = मराठीमें = ।।

शीलतारीला सागरी = गोवरधन धरीलाकरी = नीद्रान मोडीतां सकलनगरी = द्वारके मझारी आणीली मथुरा नीमालगस्प्रत्र देआणुनी = मुखें प्रासीला दावाग्नी = गत गर्भझाला घेऊनी = नीज जननी तो षार्थ = अ या जन्में नेणों कीती = अकर्त्याची कर्में गाती = अगुणाचे गुण वर्णीती = तेणें श्रीपती सुखावें = जोसुखे तीं नीज स्वभावे = तोही जन्मकर्म गुण वैभवें = गातां कीर्तनी अतीसुखावें = त्यांहे गोरवें डुलतु =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ मंदालसोपदेश ॥

सुद्धोसी बुद्धोसी निरंजनोसी संसारमायापरिवर्जितोसी संसारस्वप्नं त्यजमोहनिद्रां
मंदालसागायत्यनुवाचपुत्रम् ॥१॥ सुद्धोसीरितात नबेसी जन्मः कुतंचमायाभ्रगनृणीकाव
नकस्यंत्वं तातनकोपीतेस्ती ॥२॥ मंदालसा पंचात्मकंदेहमीदृत्वदीयं वात्वातीरालं
तंत्वं नडोसी सासींचेतांकुरुनोभिस्त्वं ॥३॥ मंदालसा नत्वंसुतोमेनचमातृजातेः
हुरासपत्य नकोपीबंधु अखंडकूटस्यप्रकारापुंन ॥४॥ मंदालसा हहेतीसम्हान
करोसी कितात निसद्धकानंद धनात्मकस्त्वंम नरूपमस्येह तथोपलभ्यतेः ॥५॥ मंदालसा
नकर्मणाबध्यतेनोकनीयान नान्तोनः चादीर्घनचसंप्रतीक्षा कीरोदसोतात नकोपीलक
॥६॥ मंदालसा यथाकलचंद्र प्रसोभवन्ती तथासुसुद्धे स्वपीदेहभाव नहास्यबुद्धी
तरंगीतरंगे ॥७॥ मंदालसा सहस्रसोमातृपीतानसुताः संसारसीन्धो व्यवहारनोपी
नमीरोधोसुतीं नैवस्तुस्ततेस्ती ॥८॥ मंदालसा सत्यासीः सीध्योसी सनातनोसी
शुद्धोसीः हेयोसीः नीरामयोसीः ब्रह्मसीः पूर्णसीः परात्परोसी ॥९॥ मंदालसा

गोविंद गोविंदमुकुंदकृष्ण गोविंद गोविंद हरे मुरारे गोविंद गोविंद वैकुंठकृष्ण
श्रीगोविंद दामोदर माधवेती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ज्ञानी पंडीत आदी कौन ॥

॥ सोही पंडीत सोही धारखी = सोही संत सुजान ॥
॥ सोही सुर सचेत सो = सोही सुभट प्रमान ॥
॥ सोही ज्ञानी सोही गुनीजन = सोही दाता ध्यानी ॥
॥ तूलसी जाके चीत भई = राग द्वेष की हानी ॥

॥ भजन ॥

॥ लाभ कहां कंचन तन पाये = भजे नः मृदुल कमलदल ॥
जोचन = दुख मोचन हरी हर खी नः ध्याये = तन मन धन अ ॥
पन ना की नों = प्रान प्रानपती गुन नी न गाये = जोवन धन ॥
कुल धोत धाम सब = मीथ्या आयु गँवाय गँवाये = अजे ॥
गर्व बीमुख रंग राते = डोलत सुख संम्पती बीसराये =
उक्तीत की सोरी मीटे तापना = बीनद्रह चीन्तामणी =
॥ उरजाये ॥

॥ संत की सको कहना चाहीये ॥

॥ अकीं चंन इंद्रीय दमन = रमनराम = राज तार ॥
॥ तूलसी एसे संन जन = बीरले या = संसार ॥
॥ अहं वाद मैं तैं = नही = दुष्ट संग नही कोई ॥
॥ दुख ते दुख नही उपजे = सुख ते सुख नही होय ॥
॥ सम कंचन का चे गीनत = सत्रु मीत नही कोय ॥
॥ तूलसी या संसार मे = कहत संत जन सोय ॥
॥ बीरले बीरले पाईये = माया त्यागी संन्त ॥
॥ तूलसी कामी कुटील कली = के की काक अं
॥ मैं तैं मेट्यो मोह तम = उगो आत्म भान =
॥ सन्त राज सो जानीये ॥ तूलसी या = सह
॥ कंचन का चही समगीने = कामनी काठ प
॥ तूलसी एसे संन्त जना ॥ पथवी बम्ह सम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब दुख घटे कहा ये होय॥ हीरू सबमे बडो कहीयतु॥ रहत नीत्त दुख भोय॥ उग्रतपर
करत सुन कै॥ उठत सहज अंगार॥ अंबरडर अमरावतीतज॥ भजत जारे बार॥ ब्रह्म
तेपजाने॥ दुरे कंवल मृणाल॥ अंग भग मंडीतभयो॥ गीरीगये वृषण॥ बीडाळ॥ बूझ्यो दीप
जैसै॥ बडो कहीये तू भूल॥ मानीलछुहसी सरन नागर॥ रहै सो सुखमूल॥
सबसुख स्याम सरनेगये॥ और गैर न कहू आनंद॥ इंद्र हके भये॥ दुखमूल एक प्रेम
ग॥ ग्रही न मानत कोय॥ सुख पग्यो जीही नीवर्ती को॥ मन जानी है दुखसोय॥ सतसंग अंबु
वृज सरोवर॥ कोरतन सुख वास॥ कीजीये हरीये गतीन को॥ भयर नागरदास॥
अजीया काहू को दुख भोवै॥ कबहूं कहू सुख सोक॥ कबहूं है॥ कबहू हसे॥ कबहू रोवै॥ या
जगमे हैं ये हीतमारा॥ एसै ही नीत्त होवैं॥ नागरीदास भगो नंदनंदन॥ जनम वृथा मत खोय॥
श्रीराधाजी के नाम॥ पहली लीखगये हैं॥ राम कहने का मजा जीस की जुबा पर आगया॥ प्यारे पर
रथपागया॥ वह मुक्त जीवन होगया॥ छूटा मजा प्रहलाद ने॥ इसनाम के परताबसें॥ नरसींह होय॥ हरण
या॥ त्रैलोक मे जस छागया॥ अधम भीलनी॥ जातसी परी॥ प्रेमसे॥ समरन कीया॥ परमात्मा घर आ
॥ बैर घट से॥ त्यागये॥ कली काल के जो भगत है॥ उन की प्रीत बना है अडा॥ नरसी की हुंडी झार

यह मन नेक न कह्यो करै ॥ सीख सीख्या य रह्यो अपनी सी = दुरमती तें न टरै = मद माया बस भयो बावरा
हरी जस नहीं उचरै = करी पर पंच जगत के ठग के = अपनो उदर भरै = स्वान पुछ ज्यो होय न सुधो = कह्यो न
कान धरै = कह नानक भजराम नाम नीत = जाते काज सरै = ॥ सकै को सोभा बरनी अपार ॥ थर थर काते
खनी खीख गुन = अटक त बार हीं बार = लज्जीत सब उपमान जहाँ तहँ = फीरत बीकल बेकार = एक ही बार
लखे जा की छबी = भुल जात घर बार = उपजत प्रेम अपार हीये बीच = सरबस जा तो वार = चीत्त चीत होत
चीत्त पाहन पर = सुरती सुखमा सार = को ही जन्याम ताही बरनन कर = लेही अजस को भार = ॥
हरी की गती नही को ई जाने ॥ जोगी जती तपी पचहारे = और बहु लोग सयाने = छीन मेरा व रंक को क
रही = राव रंक क्रीडा रे = रीते भरे भरे सखनावै = यहता को व्यवहारै = अपनी माया आप पसा
आपही देखन हारा = नाना रूप धरे बहु रंगी = सबते रहे नीयारा = अबीगत अलख अपार नीरंज
जो सब जग भरमायो = सकल भरमतें जन नानक प्राणी = चरण ताही चीत लायो =
साधो मन का मान त्यागो ॥ काम क्रोध संगती दुरजन की = ताते अही नीसी भागो = सुख दुख दो
समकर जानो = और मान अपमान = हर्ष सोक ते रहे अतीता = तीन जगत तत्त पीछाना = अ
नीन्दा दोउ त्यागे = खोजे पद नीर्बाना = जन नानक यह खेल कठीन है = कोई गुरमुख जाना =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ आसीक्हं नीहारे नामपै = मीलजावैतो कंठ लगावै ॥ मेरा कारतेरा नाम अमर है = हमपर क्यातरा
नरहै = करो कृपासो नहीं उजरहै = चलचलंतहारे धाममैं = क्यों जगेजगे भटकावै = ॥१॥ बीनमीले
आशा कसे न करना ओला = कृष्णी तो फेर मेहरा झोला = वनवन तुमको ढूढतडोला = बस्ती और
नमै = तेरापना कहीं नहीपावै ॥२॥ बीनमीलेस = ॥ आशाकरीवल मारा कृष्ण अमर है = मेरे हालकी
खबरहै = मीनारस = मुसे नहीं सबरहै = मेरी अर्जी कृष्णमुरार सें = देखे कबतक नीजर मीपा
दीन मीले सबर नहीं आवै = ॥ आशाकरी वकभी नहीं मरते = दुखदरीद्र सबजगमें भरते = नडे
दया नहीं करते = तुमरे भक्त गुलामपै = मीलजावैतो कंठ लगावै ॥४॥ बीनमीले सबरनहीं

= पंगलचरण =

कृत वंशीनादं = उरबनमालं = नयन रसालं = गोपवरं = सुंदर घनश्यामं = पुरण कामं = अ
अभीरामं = योगीवरं = नंदकुमारं = सबश्रुतीसारं = पेमाधारं = धरणीधरं = भजराधाकृष्णं = प
मुदारं = माया सहीतं = ब्रम्ह परम् ॥ श्लोक = पुजा कोटी गुणं स्तोत्रं = स्तोत्रात् कोटी गुणो जप
जपात् कोटी गुणं गानं = गानात्परतर नहीं ॥ ध्यायन् कृते यजन् यज्ञै = स्त्रेतायां द्वापरे अर्चयन्
यदाप्नोति = तदाप्नोती = कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जग बीपरीत भये आर हूंन आँको होय = दुष्ट आतताईनको ध्यानमें नः धरीहै = शस्त्रके प्रहार होय चाहे कोई बीषदेय = कोटीन उपाय करें मारेतेन मरीहै रांकमन मानेना डरेनः काहूँ आप हातें = एक बेर ताल ठोक काल हूंते लरीहो सीवकवी कल्पना नीधान भगवानतुम = जाके हो साहाय्यता को कोऊ कहा करीहै ॥ मीवरके सीर मोरसीखा = कञ्जकुं चीतके राकलाप सुभावै = चंन्द्र मनो मुख मंण्डलसे = उपमाबनीके उपमानलजावैः हारगले मणीमालतलसे = उर कौस्तभकी छबी कौन सजावै = मोहनके अधराधरपै = सरयु मुरलीधुनी कामलजावै = ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥वारीजाऊं रे=सांवरीयाँ= तुमपर वारनारे=॥ नवसेजन्मलीयो हरीकुलमैं= सब केदुख= हरे
क्षणमें= जसुदाभरम युगनी झुलेपालनारे॥ वारी॥ केशी कंस तृणावर्त= अघा
र= बायक तृणक= महीषासुर ओर अधम पुतना= तारनारे=॥ वारी॥ मातपीता की
कुटाई= नंदराय घर= धेनु चराई= कुदपडे कालीदह= बीषधर= नाथनारे॥ वा
इंद्रने कोप कीयो ब्रजउपर= सावन० वारो= कोइ नही भुपर= सुरश्याम प्रभुनवल
रवर धारनारे॥ वारी॥

॥ परमार्थके= साधनेआठ रीपु॥

धनका नाश= आरोग्यताका नास= आयुका नास= सादगीके= सुखका नास=
१ २ ३ ४

देशके स्वार्थका नाश= धर्मका नाश= सत्यका नाश= वैराग्यका नास=
५ ६ ७ ८

॥ भक्तीका नास= ज्ञानका नाश=
९ १०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ तूंहै सकल बीज्य आधार ॥ तृण में तूंहै तरु में तूंहै तूंहै जगत मँझार = थल चर नभ चर जल
तूंहै = तूंहै जीव अपार = चंद्र सूर्य तारा गण तूंहै = तूंहै नभ बीस्तार = तेरे बल पर सब पृ
रते है = रथ के चक्राकार = नीरालंम्बहो स्थीत है सब पर = तेरा मील न पार = ॥
॥ सकल भक्त नको सीताराम ॥ नारद दत्तात्रेय ऋषभ शुक गुरु वसीष्ठ हनुमान भरथजी भे
लखनजी वालमीक मीमान = दसरथ को सीताराम बूद्धजी मनुजी पुरनेकाम सुरजी तूलसी
नामलगाम = काग भुसंण्ड गुरु लोमसजी गोरखनाथ सुनाम बीभ्यामीत्र भरथरी गोपी च
धास्यामीन् दयालु रामानन्द रामानुज भगत कबीर कमाल पतंजली कपील व्यास प्रहल्
धुधीष्टर हरीश्चंद्र बीष्णु ब्रम्हा संकर जनक ध्रुव पुरन मच्छंन्दर सनक सनंन्दन सु
सनत कुमार अष्टावक्र भगत अभीनी अर्जुन नंदजी बीदुर चैतन्य चरनदासजी नमनदास
रामतीर्थ बीवेकानंद जीव मृत रामकृष्ण सदन रैदास दादु पलटू नाभाजी गांधीजी दयान
जगजीवनजी ईसा समस्त वरेन्य मरद्दै कबाद सुकरात रहीमन अफलातूं लुकमान बूकरात मुह
मदर हातीम मजनूँ युसुफ गाजीब कमर नोकजी जसोदा कौसल्या उमा सुमीत्रा सीयरी मीरा
री राधा सीता मनुसया सुबचनदासी फातीमा परीयमजी हरीदास माहादेवी सहजो दयालदासी पद्मा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ उधो वृथा करत बकवादः ॥ हम जान्यो तुम जानत नाहीं सुधा सुखस्वादः सकल ब्रजमोहनमई
और गोपी गायः तीनैं तो बीन्द्यो घनस्याम सुंदर कैसे और सुहायः हमारे तनकी खंड खंड ज्यों
शुभी मेजारः न्यारे न्यारे ऊपर जांही लखी नागर नंदकुमार ॥ = उधो यह तनः जोः को ऊंफे
ऊ नंदनंदन नज प्यारे कोः और न मनमैं आवैः जो यातन की तूंबा काढ कैं लेकर दुंदभी सजईः म
उतंग सब्द सुर निकसेः काल कालः हीः बजहीः = कहत बसुर फूल फूल शाखा लेत उठे हरी नामः ॥ उधो
उधो तुमः नः जानतः प्रेमः ॥ बसो मथुरा राजधानीः तहां व्यापक नेमः कथनः नीर्गु
ग्यान सुखोः राजनीत प्रबंधः प्रीत नैननीः सुपरीसनीः कहा जानेअंधः यहां ब्रज में वृथा
क्रीजैं जोग नीरस पाठः छाड नट नागर मधुर फूलः कौन चाले काठः ॥

~~पूर्व भाग में~~ ॥ लहि बकीयाद ॥
पानी की एक बूंद सुः साजन नाथां जीवः अंदर बहुत अंदेशाथा = बाहर बीसरा पीवः अधो मुखी न व
रहे थेंः तलसी रउपर पावः राखन हारा राखी याः जठर अगनी की लावः जठर अग्नी सेः राखी याः ना
ड़ी गण भलः वहसाहीब दरहालु हैंः कोवो वतहेंसुलः अलीफः अलेहकूँ याद करः जीन्ह की न्हायह साज
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= गोपीयोने उद्धोजीसे कहा =

॥ स्याम: तन: स्याम: मन: स्याम है हमारो धन: आगें जाम उधो हमें स्याम ही सों काम है ॥ स्याम ही ये
॥ स्याम जिये स्याम बिनु नाही तीये = आंधे की सीलाकरी = अधार स्याम नाम है = स्याम गती स्याम मती
॥ स्याम ही है प्रान पती = स्याम सुखदाई सों = भजाई सोभा धाम है = उधो तुम भये बौरे पाती लेके अ
॥ ये दौरे = योग कहाँ राखे = यहाँ रोम रोम स्याम है: ॥

॥ नारायण स्वामी कृत भजन =

कर मन: नंद नंदन को ध्यान: येही अवसर तोही फीरन: मीलेगो = मेरो कह्यो अबमान: घुँघरवार
अलके मुखपै: कुंडल झलकत कान: नारायण अलसाने नैना = झुमत सपनी धान =

॥ गता कला पंचदशा प्रतीष्ठा = देवाश्च सर्वे प्रतीदेवतासु = कर्मणी वीज्ञानमयश्च आत्मा =
व्यये सर्व एकी भवन्ती: श्रुतीप्रमाणहै = सत्य व्रतं सत्य परं त्रिसत्यं = सत्यस्य योनी: नीहि
सत्ये = सत्यस्य सत्यमृत सत्यनेत्रं = सत्यात्मकं त्व
रणं प्रपन्ना:

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घायलमार सुमार भई हीय = मदन मोहन द्रग बान लगें ॥ = [illegible] सुधी नारही है =
घटपट की कछू : एक टक नैननी नैन पगें = मुरछीत होत गीरत गही भुज भरी = अ
सुधा रस पान पगें = ॥ नागरीया आसक्त अमल मैं = दोउ मीलके सब रैन जगें = ॥
भक्ती बीन की न अपमान सह्यो = ॥ कहा कहा न असाधन कीनौं = गरीब तथ
रह्यो = अधम राज : मद माते तैं = रथ सो जड भरथ न ह्यो = पट झटकत द्रोप
न : मटकी = हरी को सरन च ह्यो = [illegible] मत्त सभा कौरवनी =
बीदुसु क हा क हान क ह्यो = सरनागती आरती गज पतीकौं = आपुन चक्र ग ह्यो =
हा हरीनाथ पुकारत आरत = कौंन ओर नी भयो = व्यास बचन सुनी मधुकर साहे =
भक्ती पन सदा ल ह्यो =

॥ ॐकार के जप का फल ॥
॥ यस्तु द्वादश साहस्रं : नित्यं प्रणवं भ्यसेत् ॥
॥ तस्य द्वादश मिर्मासैः परब्रह्म प्रकाशते = ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिन्धुर्विन्दुमहो प्रयच्छति नहि = स्वैरी च धाराधरः
संकल्पेन विना ददाति नः कदाप्यत्यच्च कल्पद्रुमः
स्वच्छन्दोऽपि विधुः सुधा वितरणे रात्रिं दिवापेक्षते =
दाता कोपि न दृश्यते विनियमः श्रीकृष्णचन्द्रं विना =

येषां श्रीमद्यशोदासुत पदकमले = नास्ति भक्तिर्नराणां =
येषामाभीरकन्या प्रियगुणकथने = नानुरक्ता रसज्ञा =
येषां श्रीकृष्णलीला ललितनिगमने = सादरौ नैव कर्णौ =
धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति नियतं = कीर्तनस्थो मृदङ्गः =

रे चित्त चिन्तय चरं चरणौ मुरारेः = पारं गमिष्यसि यतो भवसागरस्य =
पुत्राः कलत्रमितरे नहि ते सहाया = सर्वं विलोकय सखे मृगतृष्णिकाभम् =

॥ ज्ञानहीं भक्ति नहिं कुछ भेदा =
॥ उभयहरहीं भवसंभवखेदा =
॥ जब मैथा तबहरी नहीं = अबहरिहैं
॥ मैः नाथ = प्रेमगलीअती सांकरी
॥ तामें दोनः समाय = ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औ बंधे दीनबंधु दीनपु = भोजनेच्य = जनार्दनम् = शयने पद्मनाभं च = विवाहेच प्र
पतीम् = युद्धे = चक्रधरं देवं = प्रवासेच = त्रिविक्रमम् = नारायणं = तनुत्यां
= आधारं = प्रोयसंगमे = दुःस्वप्ने = स्मर = गोविंदं = संकटे = मधुसूदनम् =
कान्ने ~~नन्तकीर्त्तनं~~ कानने = नरसिंहं च = पावके = जलशायीनम् =
जलमध्ये = वराहं च = परवते = रघुनन्दनम् =
गमनेवामनं चैव = सर्वेकार्येषु = माधवम् =

साईं कीया सोही रहा = जोकुछ करे सोहोय = करता करे सोहोत है = आहे कल्पे कोय = सोही हमारा = साईं
जो सबका = पुरणहार = दादुजीवन मरणका = जाके हाथ बीचार = स्वर्ग भवन पाताल मधी = आदी अंत
सब सीष्ट = सीरजी सबनको देते हैं = सोही हमारा ईष्ट = मनसा बाचा कर्मणा = साहीबका = बीसवास = रे
गसीरजनहारका = करे कौनकी आस = सीरजनहारा = सबनीका = एसा है समरथ = सोही सेवग है रहा =
नहीं सकल पसारे हथ = धन धन साहेब तू बडा = कौन अनुपम रीत = सकल लोक सीर साईयों = बैठी
रहा अतीत = हूँ बलीहारी सुरतकी सबकी करे संभाल = क्रीडी कुंजर पल हूमें = करता है प्रतीपाल =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ एसो ध्यान शंकरजीको कहेको बीसीरीया ॥ सीस गंग गोरा संग श्वेत रंग पोत भंग माथे चंद्र हात मृग
भोले से भंडारीया = एसो = गले नाके सुंड माला और सोहे नाग काला = संभु बाला संभु बाला बेल के पत्र
वारीया = एसो = तीन लोक ने न तीन करमे त्रीसुल बीराजें = लख गन्न धंनधंन बीच्चे के पसारीया = एसो
॥ राम धन्न कीजे सेवा = माहादेव देवन देवा = दुधपुत लक्षी दाता = नाम भीपुरारीया = एसो =
॥ माया दास काम बंध्या तूक्या नाने बंद्गी = ॥ साधा सेती धुमधाम = चोरां जैसे करदा काम = सौ
सऊकारा नाल हसके बोले = गरीबौं से रंजगी = माया = आवनंगे जो जमदे दुतः पकडले जावन
॥ मन बूत = पलपलदा हीसाब मंगसेन = छुउंथा औखी लंधसी = माया = करता है मऊकदास
गडदे पराई आस = रटले तूं राम नाम मीट जाय गंधगी = माया =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ मैं नीत्त भक्तन हाथ बीकाऊँ ॥ आगेया मन हृदय मेरा चुंके पलक
जीयाऊँ = भक्तन की जैसी रुचि देखूँ = तैसाही भेष बनाऊँ = दरो अपने
भक्ती लगी = तीनके वचन निभाऊँ = उच्च नीच सब का भक्तके =
कर सब जन बनाऊँ रथ हाँकु पग धोऊँ बासन मांजु जानवावु =
नहीं राम कुछ तीनते = नहीं कछ तीनही सत्ताऊँ = प्रेम सहीत चलपत्र
फूल = कोई देवे सोही पाऊँ = नीज सर्वस्व भक्तको सोंप्यो = अपनो सब
भुंजाऊँ = भक्त कहै सोही करु नीरंतर = वैचेतो बीकाऊँ =

एकोदेव सर्व भूते सुगूढ = सर्व व्यापी = सर्व भुतान्तरात्मा = कर्माध्यक्ष = सर्व भुताधीवास =
साक्षीचेता = केवलो नीर्गुणश्च = प्रेमते प्रगट होंही भगवाना =
स्वास स्वास पर नाम जप = प्रथा स्वा समत खोय = क्रम क्रमे जब खसे = भाव न होय = होय =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ सर्वपुण्यं सदापूर्णं अखण्डानन्दविग्रहम् ॥
॥ अनन्तं जगदाधारं वन्देऽहं परमेश्वरम् ॥
॥ चीतवृत्तेरतीतत्वं स्तुतीहीनमनामयम् ॥
॥ नमामी शीरसा नीत्यं सर्वदृश्यवभासकम् ॥

॥ ध्याऊँ देव अखण्ड चीत्त अखीलचीथ आधार ॥
॥ सर्व पुन्य आनँदघन अचीचल पद दातार ॥
॥ अचीचल पद दातार पापहारक भवतारक ॥
॥ गुणातीत गुणपूर्ण अनप्रीय तापनीवारक ॥
॥ रोदणा गतप्रतीपाल एकअद्वैत मनाऊँ ॥
॥ कीजेनीरमलबुद्धी शुद्ध सीत अच्युत ध्याऊँ ॥

॥ सन्मुख होय जीत मोही नमहे ॥
॥ कोटीजन्म अघ नासैं तबही ॥
॥ गीतालक्ष्मी शारदा गीताही ओंकार ॥
॥ गीताही गंगाउमा गीता श्रुती का सा ॥
गीताश्रुतीकासार कृष्णनेगाईगीता
सुनीपार्थमनलाय मोहवैरीकोजीता
राजाजनक सुजान जोतहल काढीसी
जयदेवभजव्यास वेदमथकाढीगी
॥ प्याराइश्वर सर्वके हीयमेंकरे नीवारा
वीषईमदनलखसके यदपीपाससेपास
यदपीपाससेपास आतने ईसछुपाया
तजोजगतकीआस ईसतुतहीलखपा
जयदेवतजआस ईतनहीतूसनेन्यार
॥ सबकाअपनाआप तापहर सुखकर प्यार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारायण तू भजन कर=जनतू देरलगाय=नानानोयादेहमे स्वास रहेकीनाय=धन जोबन इऊ जाय गो
घउडेकुपुर=नारायणगोपालभज क्योंचोटे जगधुर=॥भजगोबीद=गोबीद=गोपाला श्रीकृष्णकन्हय
ला=भजगोबीद गोपाला=॥ मोरमुकट पीतांबर सोहे=गलमोतीयनकीहै माला स्वामी गलमोतीयन
ताता पीताकी बंद छुटाई=टूटगये संकलताला=भज=केरापकड केराकोपखडे=रंगभुमी आयेनंद
ज=जेठपताळ कालीनागनाथ्यो=फणफण नीरतकरेलाला=बृंदाबनमे रास रचायो=संगलीयेगे
पाला=भज=सुरदास आसाचरननकी=दरशन दीजोनंदलाला=भजगोबीद=गोबीद गोपाला
ॐनाम सबसेबडा=इससेबडानःकोय=जोसुमरेयानामको=सुद्ध आतमाहोय=॥ आवो सज्जन
गानकरें=हरीॐहरीःहरीॐहरीःहरीॐहरी=॥ पुनी चीत्तसेभीयेध्यान करें=हरीॐहरीः
येबीश्वमुसाफीर खानाहै=इसमेंनीत आनाजानाहै=हरीॐकाटीकट खरीदकरो=हरीॐहरी
इसटीकटका ध्यान सदा रखो=येकर अब आनेवालाहै=वोटीकट देख असवार करें=हरीॐह
अबघंटीबजनेवालीहैं=चलनेकी करो तयारीहैं=सत्तधरमका सौदा बांद धरो=हरीॐहरी
जीसकोतैनें समझा अपनाहैं=येदेखा तैंने सुपनाहै=बससहीमेंकुछसारजचा=हरीॐहरीः
आनंद जो चाहोः आगीमीका=तोयेबीचार दृढ करमनमेंः प्रतीछीन जीभ्यासेः रटनकरो=हरीॐ

॥जीनखोजातीनपाइयां=गहरेपानीपैठ=मैबौरी बूडनडरी रहीकीनारेबैठ=॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

री आज काल ही सब लोक लाज त्यागी दीऊं = सीखे हैं सबै बीधी सनेह सरसाय बो =
यह रसरवान दीन द्वैमें बात फैल जैहैं = कहा लोसीयानी = चंद्र हाथन लीपा
यबो = आज हूँ नीहाज्यो बीर = नीपट कालंदी तीर = दोऊ न को = दो
ऊ न सों = मुख मुसक्यायबो = दोऊ परे पैयाँ = दोऊँ लेत है बलईयाँ
ऊन्है भूख गई गैयाँ = ईन्है गागर उठायबो =

हे = देव = हैं = दयित = हे भुवनेक बंन्धो = हे कृष्ण हे चपल = हे = करुणैक सीन्धो =
हे नाथ हे = रमण = हे नयनाभीराम = हा = हा = क्रूरानुभवीतासी = पदं = दूरोमें =

धन्य मुनीवर आपदीन्हो = मतीअनुग्रह सोकीयो = जासु सुर ब्रह्मादी दुर्लभ = नाथतू =
रसनदीयो = अबकृपाकर प्रभुदेहुँ यहबर = चरणपंकज मतीरहें = जन्मजहाँनीनकमीत
॥ तहाँएकतूम्हीं नहीं हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतो
षसो॥ मधुमत् पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान् नो वनस्पतिः मधुमानऽ
सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ यो देवोऽग्नौ योऽप्सु यो विश्वं भुवनमाविवेश।
यओषधीषु योवनस्पतिषु तस्मै देवायनमोनमः॥

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते हैत्यान् दारयते बलिंछलयते
क्षत्रंक्षयंकुर्वते पौलस्त्यं जयते हलंकलयते कारुण्य मातन्वते
म्लेच्छान्मूर्छयतेदशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

ॐ ईश्वरोरुद्रोसेनेतीमूर्तीभेदःवीभागीनेःव्योमवद्व्याप्तदेहायःआदक्षीणामूर्तयेनमः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यं शैवाः समुपासते = शिव इति = ब्रह्मेति = वेदान्तिनो = बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः
कर्तेति नैयायिकाः । अर्हन्नित्यथः जैनशासनरताः कर्मेति = मीमांसकाः
सोयं नो = विदधातु = वाञ्छित फलं = त्रैलोक्य नाथो हरिः ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय = नमस्ते चित्ते सर्वलोकाश्रयाय =
नमोऽद्वैत तत्वाय = मुक्ती प्रदाय = नमो ब्रह्मणे = व्यापिने शाश्वताय =
जाउं कहा तजी चरण तुम्हारे ॥ काको नाम पतीत पावन जग = केहि अति दीन पियारे
कौन देव बराय = बिरद हीत्त = हठि हठी अधम उधारे = खग मृग व्याध पषान बिटप जड़
जवन कवन सुर तारे = देव दनुज मुनी नाग मनुज सब माया बिवश बीचारे =
तीनके हाथ दास तुलसी प्रभु = कहा अपन पौ हारे =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ सीखोकी इस प्रार्थना ॥

एक ओंकार सत्तनाम = कर्त्तापुरुष = निर्भउ = निर्वैर = अकालमुरत = अजुनीसैभं गुरप्रसाद ॥

॥ आदीसच = जुगादीसच = हैभीसच = नानक होसीभीसच = वाहगुरु ॥

॥ मुसलमानोकी इस प्रार्थना =

बीसमीलाहीरहीमानीरहीम = अलहम्दो लीलाहे = रब्बील = आलमीन = अरहीमानीरहीम = मालि

योमीद्दीन = इयाका = नाबदो = वइयाका नस्तईन = इहदेनस = सिरातल = मुस्तकीम = सीरात

जीना = अन = अम्त = अलैहीम = गैरील = मगदुबे = अलैहीम = वलजालीन = आमीन =

॥ जैनीयोकी इस प्रार्थना ॥

अरीहंतनमो = भगवंतनमो = ॥ परमेश्वर जीनराजनमो = प्रथमजीनेश्वर = प्रेमे पेरवत = सीद्धं सगम्ग =

क्रोजनमो = प्रभुपारंगत = परम महोदय = अवीनासी = अकलंक नमो = अजर अमर अद्भूत अतीसय =

नीधी = प्रवचन = जलधी = मयंक नमो = सीद्ध बुद्ध तूं = जगजन सज्जन = नयनानंदन = देवनमो = सकल सुर

सुर = नरवर नायक = सरिभहोनीरा सेवनमो = तूतीथंकर = सुखकर = साहीब = तूं नीकारण बन्धो नमो = सरणागत = भ

॥ [illegible] = तूंहीकपारस = सीन्धो नमो =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवलज्ञानादर्शे दर्शितलोकालोकः स्वभावनमोनाशीत सकल कलंक कलुषगणः दुरीतउपद्रवभाव
मोः जगचीन्तामणीः जगगुरु जगहीतकारक जगजननाथनमोः घोरः अपारःभवोदधीःतारणः
तुंङ्गीवृपुरणोसाथनमोः अशरणःशरणःनीरागःनीरंजनःनीरूपाधीकः जगदीशनमोः बोधदी
नुंःअनुपम दानेश्वरःज्ञान वीमळ सुरीसनमोः

)|= पारसीयोंकीःईसूः प्रार्थना=||

यानीमःमनोःयानीमःवचोःयानीमःषयओथनेमःअषओनोःजरथुश्त्रहे॥फ्रा अमेषाःस्पेन्त
गाथाश्चोःगेउरवाइनःनमोवेःगाथाओःअषओनीसःअहयाःयासा नेमङ्हाःउस्तानूःजस
रफेथ्रह्याःमईनयेंयुराःमज्दाओःपउरवीमःस्पेंतह्याःअषावीसेंगःषयओथनाःवङ्हेउस
मनङ्होःयाःघनेवीराःगेयुश्चाःउर्वीनेमःयाषय ओथनामःहाईतीमःयन्मइदेःअहूनवईतीमः
अषोनीमःअषहेःरतूमःयन्मइदेःअहूनवइतीयाओःगाथीयाओःहन्दाताःयन्मइदेःयेंगहेःहान
आमत्येसेनःपइतीवेंगहोंःमन्द्राओःअहूरोःवईथाःअषतःहचा याओंग हामचाःतासःचाःता
यन्मइदेःनमस्चाःयःआरःमेतीराःजायचाःनमस्चाःयःआरःमेतीराःजायचाःनमस्चाःयःआरःमेतीराःन
अस्तेमःवोहूःवहेस्तमःअस्तीःउस्ताःअस्तिःकहचाःअहमाईःहइषाईःअहेस्ताईःनमेम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By eGangotri

॥ हीन्दु ॥ इस स्तवन=॥

आगतो देव तव भक्ती अनंतरूपा: व्याप्ता चराचरमयें: भुवनत्रये सीन्: तारापथे भुवी नरेभ्य: नरेभ्य
तोऽनले मरुतो: मृदयपी: सा अवीरास्ते: ॥ परयामी तां भुवननायक: भूतमात्रे: दृष्टं हीनेकम
तस्त: तया: वीहीनम्: एतन्मुहुर्मुहुरहं: मनसा: वीचीन्त्य: पारंनयामी: परमेश्वरस्तेः महीम्नः
अन्यद् ब्रवीमी: कीमहं: जगदेकबन्धो: बन्धुर्नकोऽपी ममदेव सुतोपी नास्ती: तत्ते-पदाब्जवीमुख
हाधमस्य: हस्ते: तवैव करुणाम्बुनीधे: गतीर्मे=३॥

=॥ बौद्धो की=इस: प्रार्थना ॥=

नमोतस्स भगवतो: अरहतो: सम्मा सम्बुद्धस्स: नमोतस्स: भगवतो अरहतो: सम्मासम्बुद्ध
नमोतस्स: भगवतो: अरहतो: सम्मा सम्बुद्धस्स: बुद्धं: सरणं गच्छामी: धम्मं: सरणं गच्छामी
संघं: सरणं गच्छामी: दुतीयंम्पी बुद्धं: सरणं गच्छामी: दुतीयंम्पी: धम्मं: सरणं गच्छामी:
दुतीयंम्पी: संघं: सरणं गच्छामी: ततीयंम्पी बुद्धं सरणं गच्छामी: ततीयम्पी: धम्मं: सरणं
गच्छामी: ततीयंम्पी: संघं: सरणं गच्छामी: पाणातीपाता वैरमणी: सीक्खापदम्: समादीयामी:
अदीनादाना: वैरमणी: सीक्खापदम्: समादीयामी: कामेसुं: मीच्छाचारा: वैरमणी सीक्खापदम्:
समादीयामी: मुसावादा: वैरमणी सीक्खापदम् समादीयामी: सुरामेरय मज्जपमा: दट्ठाना: वैरमणी: सीक्खापदम्: समादी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ प्रभु = विश्वास = ॥

जगत में आयके = बीसा सो है = जगत पती = जगत की यो है = सोई जगत भरत हैं = तेरे नीस दीन चीन्ता और ही = परी है आय = उद्यम अनेक भाँती भाँती को करतू है = इत उत जायके = कमाई = करी लाऊं = कछू ने कन अज्ञानी = नर धीरज धरत है = सुन्दर कहत एक प्रभु के बीस वास बीना = बादही कुं बृथा सठ पची के मरत है = ॥ सुन्दर दासजी = ॥ रूप रेख बरनो कहा = को ई गुन पर गास = अगम अगोचर रूप है = पावे हरी को दास = ॥ यारी साहेब = ॥

फीका सा = फीकी बहेस से = अन्दर खुदा मीलता नही = डोरको = खुलसा रहे है और सीरा मीलत

॥ गुलाल साहेबजी ॥

राम के काम = मो काम = नही करत नर = फीरत संसार चहूँ ओर धाया = कर संताप सं सीर पर स्त्रीये = साध गोर संत नही नेह लाया = बांधी है काल जंजाल जम जाल में = रहत न ही सब सुधी हेराया = कहै गुलाल = जो राम को जानी है = जीती है काल सो ही ज्ञान पाया =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ समर्थ = रामदास = स्वामी ॥

सदा सर्वदा राम = सन्निध आहे = मना सज्जना सत्य सोधुनी पाहे = अखंडीत भेटी रघु
नयोगु = मना = सोडी बैमीपणाचा वीयोगु = नव्हे योग = यागें = नव्हे भोग त्यागें
समाधानते = सज्जनाचे योगें = जयाचेनी संगें = महादुःख भंगे = जगीं
नेवीण = सन्मार्ग लागे =

॥ श्रीमद्भागवत = ब्रह्मस्तुती = श्लोक = ॥

सृष्ट्वा पुराणी = वीवीधान्य = जयात्मरात्म्या = वृक्षान् सरीसृप पशून् खगदंशमत्स्य
न् = तैस्तै रतुष्यत हृदयो = मनुजं वीधाय = ब्रह्मावबोध धीषणं = मुदमाप देव

= मौलाना रूमने कहा =

तफ्रकहः दर = स्हे = हैवानी = बूअद = स्हे = वाहीद = स्हे = इन्सानी = बूअद =
नदानेः खुराः खुदाः नः बाराद = लेकीन = बः खुदा = जुदाः नः बाराद =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्लोक =

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च = सामान्य मेतत् पशुभि र्नराणाम् =

धर्मो हि = तेषा मधिको = विशेसो = धर्मेण = हीना = पशुभि = समाना =

सुख = दुख = दुटी भाई = सुखेर लागी याँ = दूरे = पीरिती = । दुख भाय = तारे = ठाई =

इ ईछे = आत्म = संस्थीत = क्रीया = नीरोध = तव = अहंकार = चीत्त = बुद्धी = मन =

नानी बे = स्वरूप = स्वीय = ब्रम्ह = विष्णु = आत्मा = शीव = तोमार ई = वैदीक = धीर्घे

= ऋगवेद = = युजुरवेद = = सामवेद = = अथर्ववेद =

= प्रज्ञानंब्रम्ह = अहंब्रम्हास्मी = = तत्वमसी = = अयमात्मा ब्रम्ह =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैराग्य नहीं है विषयों से तो मन कुपराम कहां से हो राम आदर नहीं है सा
तो आतम ज्ञान कहाँ से हो वचना नगई तन मनधन से तो अन्तर शाँती कहां से हो
जब अन्तर शान्ती न प्राप्त हुई तो सुख निरवाण कहां से हो नोगुल ही नहीं है गुल
तो गुल बाग़ कहाँ से हो जब अकल फीरंगी तब हुवा तो फीर ईमान कहाँ से हो
बेफीक्र फकीरी नहीं करी तो फीर आजाद कहाँ से हो जब कुफ्र की राक नहीं दुर
तो निरवाण प्रकास कहाँ से हो करता करता करी रहा और केन हीं कोय सा
सब समरथ है जो कुछ करे सो होय जो कुछ करे सो होय और नहीं करने हारा
हौं हौं मैं मैं करै अज्ञ नहीं जान न हारा बाजीगर का खेल कृष्ण गीता में गाया ईश्व
प्रेरक हरै सीथीत भरमावत माया कहैं निर्वाण प्रकारा आरी है कृष्ण तुम्हारी
जो उं भावैं तीउं करो जानहैं तुम्हैं हम सारी ॥ निर्वाण प्रकारा ब्रह्मचारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ तूझेअर्पण करे ॥

॥ लोचन लखे तो लखे तेरा ही अनुपरूप ॥
॥ वाणी जो करे तो करे तेरे गुण गान को ॥
॥ स्रवन सुने तो सुने तेरे ही मधुर बैन ॥
॥ तेरे ही तन की गंध = मुग्ध करे घ्राण को ॥
॥ त्वचा भी छूवे तो = छूवे तेरी ही चरन धुल ॥
॥ मन भी सोचे तो = सोचे तेरे ही गुण ज्ञान को ॥
॥ हृदय तेरा ही लोभी = तेरा ही आसक्त बने ॥
॥ अर्पण तूझे ही करे = चंद्र प्रीय प्राण को ॥

दोहा =
॥ सुंदर सो ही सुरवाँ = छोटो पोटा
॥ होजाय = ॥ ओट कछूरा खेन हे
॥ चोट हृदय पर खाय ॥

॥ सुख के माथे सीलपडो
॥ जो = नाम हृदय तेगा
॥ बलीहारी वंदु ख = के
॥ पल पल नाम जपा

॥ एकएवहीभुतात्मा = भुतेभुते = व्यवस्थीत = ॥
॥ एकधा = बहूधा = चैव = दृश्यते = जल = चंद्रवत = ॥

॥ जो = जो = चीतवे = संन्तजन = ॥
॥ सो = सो = लेता मान = ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ईश्वरकी=महत्ता=॥

नबईसेंजगका नाम नहींथा=तबतेरीथी सत्ता=तेरीईच्छबीनाननकोई=हीलसक
सत्ता=॥गगन सदुरा तूहीहै व्यापी=सुर्यचंद्र छबीधारी=अग्नीसमान तेजरखताहै
वायुतुल्य गतीकारी=१=प्रथमीमेंतू=गन्धरूपहैं=जलमेंरसहोराजें=आत्माबी
सबप्राणीनमें=जीवज्योतीउपराजें=कोटीकोटी ब्रम्हाँड तूशीसे=पैदाहोलय
होपीतर पाताल स्वर्गमें=तेरे अभीनग होते=२=बम्हाबीष्णु सँभुकी समत
इससेजानीजाती=सृष्टी स्थीती संहार कारीणी=प्रभुताशुरुताःपाती=वेदोंके तत्वोंका
स्वामी,=अन्तरयामी तूहै=सबसेपरे सबीमें रमता=सबथलगामी तूहै=३=नेतीनेती=
कहमुकहोगई=नीगमागमकीबाणी=इदमित्थंकहसकेनःअबभी=ऋषीमुनीध्यानी
ज्ञानी=अजरामर=अव्यत=अजन्मा=नीर्विकार प्रभुन्याई=भक्तोंका जीवनधनप्यारा
कानीशान्तीवरदाई=४=मनकीशक्ती जाहाँतकजाती=उससेदुरनीवासी=नानाभाँती
बीबीधभावोंमें=तूहै स्वयंविकासी=नामरूपके भेद भरातू=जोचाहेसोमाने=बाहर भीतर
समझजाने=सोसाधकपहीचाने=५=

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूंहैः ओतःप्रोतजगतमेः तूंसबकाआधारहरेः येः जोःनानारूपजगतमेः हैंतेरेआकारहरेः यहदृढ़
भावजमेगाजीसदीनः उसदीनसंकाजायहरेंः कपटकोटकेस्तंभबनेगाः मानसमहाउदा
रहरेंः भरदेएसीभव्यभावनाः करदेयेहींबीचारहरेंः तेरीमुर्तीसभीमेदेखुंः तेराःपअपा
रहरेंः धरदेमेरेअवनतसीरपरः करकेकरबीस्तारहरेंः होजायगाःपीनःपतीतकाः मेरा
नसहजःनीस्तारहरें।। श्रवणंः कीर्तनंः विष्णेंः स्मरणंः पादसेवनंः अर्चनंः वंन्दनंः दास्यंः सख्य
आत्मनीवेदनमः
तीद्याः वीत्तःस्वरूपःगुणः सुतःदाराःसुखःभोगः नारायणहरीभक्तीबीनः येसबहीहैं
नारायणहरीलगनमेंः येःपाचुःनःसुहातः बीषयःभोगःनीद्राहसीः जगतःप्रीतःबहु
योगीजनजानपातेहैंः नःजीसकाप्रभावः जीसकीकलाकानःपारःशारदानःपातीहैंः
नारदादीःब्रह्मःवादीयोनेःभीनःपायाअन्तः दीव्यसंख्याँयाभीः नीत्यनीत्यगुणगातीहैंः
संकरसमाधीमेंः सदाहीदृढतेजीसेः श्रुतीयाँभीनेतीनेतीकहहारजातीहैंः नानारूप
बीष्णुः मोहनमुरारीउसः बीश्वकेमदारीकोभीः गोपीयानचातीहैः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही धन्य है प्रेमी तेरा = जो असत्य को त्यागे = तुझमें लीन काम मद तज के = हो सेवक अनुराग = उ
याम = धरम की चीन्ता = यम यातना न होती = सो पाता है अन्त काल में = अलख सरूप मोक्ष का = मो
घों को पानी बरसाना = तूने भले सीखाया = सागर की तरंग माला को = तूने प्रकट दीखाया =
र्वत की श्रेणी में = वीचीत्रता दरशाई = सुन्दर बन में औषधीयों को = को तूने अधीकाई =
रुओं के समुह में तूने = बल उद्यम को डाला = तूने पक्षी लघु कीटों को = पैदा कर के पाला = फु
में मृदुता शोभा = तूहीं बनाने वाला = नीसि वासर ऋतू को वसंत में = नीज हाथों से ढाला = ८
कृती पुरुष जो कुछ सो = तूंहै = ऐ इश्वर अवीन्यासी = अभीमानी है = तूझे न लखते = बूद्धी भष्ट दु
शी = जहँ देखीये वहाँ राजती = तेरी अद्भूत माया = वही तूझे कुछ जान सका है = जीसपर तेरी दाया = ९
नप तप संयम नीयम यज्ञ का = प्रीय आधार तूही हैं = ब्रह्मचर्य व्रत पुजा दी क्रमें = गुरु स्वाचार तूही है
बँधी हुई जीन की आखों पै = कुटील मुढता की पट्टी = वे क्या समझ सकेंगे = तूझको की सोनहेयाम ई
तरल सुद्ध मानी रा मन्दर में = मुर्तीमान होजावे = माता पीता पुत्र बान्धव की = समता को उपजावे = ॥१०॥
शरणागत की रक्षा करना = एदयालू उपकारी = जोहो भुल भुलादे उसको = क्षमी पुष्कर भयहारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ नारायण बीन प्रेमके पंडीत पसु समान ॥ ॥सोही जानेजेही देह जनाई ॥
॥ तातें अती मुरख भजो = जो सुमरत भगवान ॥ ॥जानत तुमहे = तुमही होय जाही ॥

॥ हम खुदा खवाही = वहम = दुयीय = दुं = ॥ ॥खुदी को करदे दुर तो ॥
॥ इख्वा = स्त = वो = मोहा = स्त = वो = जन = ॥ ॥खुद = मे = खुदा = नजर आवे ॥

लेते = जो = भगवत = शरण जो = वेही = नर है धन्य ॥ ॥काहूं के बल भजन को = काहूँ के आचार ॥
वेही = जीवन मुक्त है = वे = ही = भक्त अनन्य ॥ ॥व्यास भरोसे स्याम के = सोवत पाव पसार ॥
ही भक्त अनन्य अन्य सब धर्म न तजते ॥ ॥एको देव = के रावो = वा = रीवो = वा = ॥
सबकी आसा छोड = एक भगवत को = भजते ॥ ॥एकं मीत्रं भुपतीर्धा = यतीवी = ॥
भोला भज मी कृष्ण = मुक्ती नीज भक्त न देते ॥ ॥एको वास पत्तने = वा = वने वा ॥
मेरे पाप संताप = आप = साही कर लेते ॥ ॥एका भार्या सुन्दरी = वा = रीवा = ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जबहरी चरण हृदय महभावे।। पातक जनम जनम के सब जीत = जीनमे सकल नसावे = ले
शोक रहत दुख सरीर = शोक समुल बहावें = धीरज क्षमा ज्ञानी करुणा दीक = आप सकल
आवें = बीनाही साधे यमनीयमा दीक = योग अंग सधी जावें = परम प्रमाथी प्रबल प्राण = म
नाया सठेहरावें = बरसत नयनः द्रवत हीय = अम्बुजः रोम रोमः पुलकावें = गद गद बचन व
मुखसे = बारबार मुसकावें = छीन छीन उठत लहर आनंद की = तन की सुधी बीसरावें =
कलाः सुख हरी दरसन को = कैसे बरणी सुनावें = ।। उधो ऐसो भक्त मोही भावें = ।। सबत
नीरंतरः मरें = जन्म कर्म गुण गावें = कथनी कथे नीरंतर मेरी = सेवामे चीत्त लावे = मृदु व
अँखीयनः जलधारा = करतल ताल बजावें = जहाँ जहाँ भगत चरण नीज राखे = तहाँ तीरथ च
लीआवे = तहाँकी रज को अंग लगावत = कोटी ब्रह्म सुख पावे = मेरो रूप हृदय मे तीन क = मै
रिउर वे आवें = बलीबली जाउँ श्रीमुख की बाणी = सुरदास जस गावें = ।।
जाकी रही भावना जैसी = प्रभुमुरत देखी तीन तैसी = ।। तुलसीदास =
पावे कहँते अटारी अटा = जीनको है लीखी : बीधी टरीय छानी = जो : पैः दरीद्र ललाट लीख्यो = कहू को
यही मेटी सकै को अगानी = सुदामा = सन्मुख होय जीव मोही जबही ।। कोटी जन्म अघ नासो तबही

॥ क्रमे प्रधान ॥

कर्म प्रधान=बीश्वकरी राखा ॥
जो जस करै सो तस फल चाखा ॥

=अहीसा=

परम धरम श्रुति बीदित अहीसा ॥
पर निंदा सम अघ न गीरीसा ॥

=सत्य=

वेद पुरान दुसर सत्य समाना ॥
आगम नीगम पुराण अखाना ॥

=आस्तेय ब्रह्मचर्य=

जननी सम जानहीं परनारी ॥
धन पराय बीषते बीष भारी ॥

=सन्तोष=

सरल सुभाव न मनकुटीलाई ॥

॥ रामायण पंचदशी ॥

=परोपकार=

॥ रामभगत परहीत नीरत पर दुख दुखी दयाला ॥
॥ भगत सीरोमनी भरतते जनीडरपहु मुरपाला ॥
॥ परहीत बसे जीनके मनमाही ॥
॥ तीनकहुँ जग दुरलभ कछू नाही ॥

॥ जीवआत्मा स्वरूप ॥

॥ ईश्वर अंस जीव अबीनाशी ॥
॥ चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

॥ नाम माहात्म ॥

॥ सोई भवतर कछू संसय नाही ॥
॥ नाम प्रताप प्रगट कली माही ॥

॥ नीष्काम भजन ॥

॥ बचन करम मन मोर गती भजन करहीं नीष्काम ॥
॥ तीनके हृदय कमल महँ करहुं सदा बीश्राम ॥

॥ ज्ञान दीप रूपक ॥

॥ भक्तकी श्रेष्ठता ॥
॥ मुनु मुनी तोही कहुँ सहरोसा ॥
॥ भजहीं जे मोही तजी सकल भरोसा ॥
॥ करहुं सदा तीनकी रखवारी ॥
॥ जीमी बालक ही राख महतारी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥तीनके हृदय कमल महँ = करहुं सदा सीयाप ॥

॥ज्ञान दीप-रूपक॥

= स्मरण =

॥कह हनुमंत = श्रीपति प्रभु सोई ॥
॥जबतब सुमरन = भजन न होई ॥

= संसार भगवन्नाथ =

॥सीयाराममें सबजगजानी ॥
॥करु प्रणाम जोर जुगपानी ॥

= सुनहु तात यह अकथ कहानी = समुझत बनेन जात बखानी
= ईश्वर अंस जीव अबिनासी = चेतन अमल सहज सुखरासी
= सो मायाबस भयेउ गुसाई = बन्ध्यो कीर मरकट की नाई
= जड़ चेतन हीं ग्रंथी परी गई = जदपी मृषा छूटत कठिनई
= तबते जीव भयो संसारी = छूट न ग्रंथी न होय सुखारी
= श्रुती पुरान बहू कहेउ उपाई = छूट न अधिक अधी कुउर
= जीव हृदय तम मोह बीसेखी = ग्रंथी छूट कीमी परे न देखी

सो भनन्य जाके असी मती = न टरे हनुमंत ॥ = अस संजोग ईस जब करही = तबहुं कदाचीत सो नीरअरई =

मैं सेवक सचराचर = रूपरासी भगवंत ॥ = जोमाया सब जगही नचावा = जासु चरीत लखी काहू न पावा

= त्याग =

॥अर्थ न धर्म न काम रुची = गतीन चहू नीर्बाण ॥
॥जनम जनम रती राम पद = यहबरदानु न आन ॥

॥देह दृष्या तुदासोहं = जीवदृष्या त्वदंशकम्॥
॥वस्तु तस्तु तदेवाहं = इतीमेनीश्चीनामती॥

ॐ॥श्री कृष्ण के राय माधवेती = ॐ मुकुंद नारसींग जनार्दनेती॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ प्रथमभक्ती संतन्ह करसंगा॥ दुसरी रती मम कथाप्रसंगा॥

=दोहा=

गुरुपदपंकज सेवातीसरी भगती अमान॥
चौथी भक्ती मम गुनगन करैकपट तजीगान॥
॥ मंत्रजाप मम दृढ विश्वासा ॥ पंचम भजन सोबेद प्रकासा॥
छटदम शीलबीरती बहुकर्मी ॥ निरत निरंतर सज्जन धर्मी॥
सातवँ सम मोहीमय जगदेखा॥ मोतें संत अधीक करलेखा॥
आठवँ यथालाभ संतोसा॥ सपनेहुँ नहीं देखै परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना॥ मम भरोस हीय हरष न दीना॥

॥ इरयमपि ईदृशीमेव हानमनंतकुलसमभीवधान=
॥ अमेयाभानसातीसंग=अरुदेहधारो नीमनं=
॥ जेमाणी जेमे जेमी कमी॥
॥ ॥
॥ ॥
॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= नानक साव की बाणी =

यह जो रीखे अंबर तारे = कीन ओ वीते वीतन हारे ।। तूं कर्तार सच्चा मेहीं साईं ।।

एक ॐ सत नाम कर्ता पुरुष निर्भऊ निर्वैर अकाल मुरत अजुनी सैभं गुरु प्रसाद जप =

जल थल मही अलपुरीयाँ = स्वामी सीरजनहार = अनेक भाँती होय पसरीया = नानक एक ॐ

आदि पुर्ण = मध पुर्ण = अन्त पुर्ण = परमेश्वर है सीमरंत संत सवित रमणं = नानक अघ ना

जगदीश्वर = है ।। एक कृष्ण सर्व देवा = देव देवात आत्मा = आत्मा वासुदेवस्य ।। जे को जा

नानक ता का दास है सोही निरंजन देव ।। वासुदेव सर्वत्र मे उन न कत हूँ उठाय = अंदर बा

सदा संग नानक काहे दुराय ।। आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच ।।

। चरन सत सत परसनहार ।। पुजा सत सत रोवदार ।। दरशन सत सत पेखनहार ।। नाम सत सत ध्यान

। हार ।। आप सत सत सबधारी ।। आपे गुण आपे गुणकारी ।। शब्द सत सत प्रबकता ।। सुरत सत स

।। त जस सुनता ।। बुझनहार को सत सब होय = नानक सत सत प्रभु है सोय ।। दीनन की प्रतीपाल करनी

संत उबार गनीमन मारै = पक्षी पसु नग नाग नर धीप = सबसमैं सबको प्रतीपारै = पोषत है जल मे थल मे पंखे

लेखे नहीं कर्म वीचारै ।। दीनदयाल दयानीधी दोषनः ।। देखत है पर देतनहारै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ एकोसीमंरो॰ नाम्को॰ नव्थलरहै समाई॰ दुजाकाहे सुमरीय॰ जम्मतमरीजाय॰ प्राणअधार॰
॥ मीत साजन॰ प्रभु एकै एकंकारैं॥ सबतेऊंचा ठाकुर नानक॰ का॰ बारबार॰ नमस्कारे॰॥
॥ अपीयानजाय॰ कीतानः होय॰ आपेआपनीरंजनसोय॰॥ रूपसत्तजाकासत्तअस्थान॥
॥ नामके धारे सगलेजंत॰ नामके धारे खंड ब्रम्हण्ड॥ नामके धारे सीमृत बेद पुरान॥ नामके धारे
॥ सुननग्यानध्यान॰ नामके धारे आगास॰ पाताल॥ नामकेधारे सगल आकार॰
॥ नामके धारे पुरीया सभ॰ भवन॰

॥ योतौ संख कपालभुषीतकरौ॰ हांतास्थी मालाधरो॰॥ देवौ द्वारवती श्मशान नीलयौ॰ नागारी॰ गो॰ग
॥ द्वीन्यक्षौ॰ बली दक्षयज्ञ मथनौ॰ श्रीशैल जावल्लभौ॰ पापंमे हरतां सदा हरीहरौ॰ आवत्सगंग
॥ नःधनं॰ नःजनं॰ नःसुन्दरीं॰ कवीतां॰ वा॰ जगदीश॰ कामये॰॥ ॥ माहदेव॰ अवगुणभवन
॥ ममः जन्मनीः जन्मनी॰ स्वरे॰ भवताद्भक्ती रहैतुकी त्वयी॰॥ ॥ वीष्णु सकलगुण धाम
॥ जाकरःमनरमः जाहोस
॥ शीवस्य हृदयं वीष्णु॰ वीष्णोश्च हृदयंशीव॥
॥ यथा शीवमयो वीष्णुः सर्वशीष्णुमयंजगत॥ ॥ ताहीताही सन्कोम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ शीतल्य हृदय ॥ ॥ यथा शीतल मया ॥

=इच्छकेप्रती=

॥ बालाग्र शत भागस्य शतधा कल्पितस्य च ॥
॥ भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते ॥

॥ श्रीभागवत ॥

॥ नमका सदैव शामीयाना रहताहै तना ॥
॥ फरसमही काहै बसंन्तकी बहार है ॥
॥ सुये चंद्रमाकी जलतीहै ज्योतीदोनु ओर ॥
॥ सुंन्दर दीवालओंका हरेक खुलाद्वार हैं ॥
॥ झरनेफुहारेबनेतारे बनेफूलफल ॥
॥ पंखा मलीया चलकी झलती बयार है ॥
॥ न्याय करनेकेलीये बैठतेकहाँ होतूम ॥
॥ कीतना मनोहर नम्हारा दरबार है ॥

॥ वीशुद्धं केवलं ज्ञानं प्रत्यक् सम्यग वस्थीतम् ॥
॥ सत्यं पुर्णमनाद्यन्तं नीर्गुणं नीत्यमद्वयम् ॥
॥ ऋषे वीदन्ती मुनयः प्रशान्ता मेन्द्रीया शयाः ॥
॥ ज्ञानं मात्रं परंब्रम्ह परमात्मेश्वरः पुमान् ॥
॥ हृत्या दीभीः पृथग्भावैः भगवानेक ईयते ॥

॥ एषदेवो वीश्वकर्मा माहात्मा ॥
॥ सदा जनानां हृदये सन्नीविष्टः ॥
॥ हृदा हृदीस्थं मनसा य एन ॥
॥ मवं वीदुर मृतास्ते भवन्ती ॥

सोही सचीदानंदघनरामा अजवीज्ञानरूपबलधामा व्यापकव्यापअखंड अनंता अखीलअमोघशक्ति भगवंता अगुणअद्वभगीरागोतीता समदर्शी अनवद्यअजीता नीर्मलनीराकार नीर्मोहा नीत्यनीरंजन स्वःसंन्देहा प्रकृतीपारप्रभु सबउरवासी ब्रम्ह नीरीह बीरजअवीनासी यहाँमोहकर कारणनाही

आत्मा पुजी करी तुलसीदासजी ॥ इति मन्त्रयंत्रतंत्रमः कवच हूँ की जाई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौनहै कहाँहै यह रूप उसका है कैसा = इसका कीसीने कुछ भेद नही पाया है = अनल अनील जल
व्योम: जगतीतल मे = जीवजन्तु ओंमें अणु अणुमें समाया हैं = आदी मध्य अवसान उसका नही
है कुछ = जायेगा का हाँको वह कैसे यहाँ आया है = उसका प्रकाश यह जगतल थल में है =
उसकी ही सृष्टी और उसकी ही माया है =

॥ श्री योगीहरी ॥

१ ईश्वर एक से अधीक नही होसक्ता ॥
२ ईश्वर एक देशी नही होसक्ता ॥
३ ईश्वर एक जातीय नही होसक्ता ॥
४ ईश्वर अल्पज्ञ नही होसक्ता ॥
५ ईश्वर की सामर्थ परीमीत नही होती ॥
६ ईश्वर पक्षपाती और स्वार्थी नहीं होता ॥
७ ईश्वर से अन्य कुछभी तथा कोईभी श्रेष्ठ नही है ॥
८ ईश्वर कीसीप्रकार पापाचरण का प्रेरक नही होता ॥
९ ईश्वर सर्वज्ञ है और महापापी का भीहीतेषी है ॥
१० ईश्वर एक कालीन नहीं होता ॥
११ ईश्वर परम दयालू सर्वज्ञ और आनंद स्वरूप है ॥

नोमुक्त्यो स्पृहयामी: नाथवीभवै: कार्यन: संसारीकै =
कींत्वायोन्यक्रौ पुन: पुनरीदं त्वामीरा: मभ्य र्थयेक =
स्वप्ने जागरणे स्थीतौवी चेलने: दुखेसुखे मंन्दीरे =
कान्तारे नीरावासरे चस्ततं भक्ती र्मामास्तु त्वई =

॥ जो कहताहै कीं ब्रह्म नहीहै: वो: आत्मघातीहै =

असंन्नेव स: भवती = असद्ब्रह्मेती वेद चेत =
अस्तीब्रह्मेती चेद्वेद = सन्तमेनंततो विदु =

॥ तैतरीय: उपनीषद: ॥

= आलीका वचन: रामसे = सुनहु राम स्वामी सन्मुख कहत चातरी मोर = प्रभु अजहुं मैपातकी = अन्तकाल ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= बालीका बचनः रामसे = सुनहुं राम स्वामी सकल चलन चातुरी मोर = प्रभु अजहुं मैं पापकी = अन्तकाल ग

तेरी गनी लक्ष्मीना परे दया नीधी = धर्म अधर्म अधर्म धर्म करी अकरन करन करे = दया
य और बीजय पाप कहकी न्हो = ब्राम्हण राप दीवायो = असुर योनी दीन्ही ता उपर = धर्म
रायो = पीता बचन खंडे तेपापी सो प्रहलाद ही की न्हो = तीन केहेत खंबते प्रगटे : नरहरी
न्हो : द्रीज कुल पतीत अजामील बीसई गणीका प्रीत बढाई = सुत्त हीत नाम : नारायण ली
हीं तूं पदवी पाई : यज्ञ करत वैरोचन को सुत्त बेद बीहीत बीधी क्रमी : त्यही हठी बांध
दीन्हो : कौन कृपा नीधी धर्म = पतीव्रता जालंधर युवती : प्रगट सत्य तेरी = अधम पुंश्च
कुल ग्राम की : सुवा पढावत तारी = दानी धर्म भानु सुत्त सुनीयत : तूमने बीमुख कहाये = बेद
न्हु सकल पांडव सुत्त : सो तूमरे जीय भाये = मुक्ती हेतू योगी बहू श्रम करे = असुर की
रोधे पावे : अकतीय कथीन तूम्हारी महीमा सूरदास कहे गावैं =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर क्या है अच्छा मुझे बतलाता =
है एक शक्ती जो अखीलब्रीथनीमीता =
दूसरी शक्ती है सकलब्रीथकी त्राता =
तीसरी शक्ती से जगत संहाराजाता =
तीनोंका मीश्रीत रूप परम ईश्वर है =
कहीये कहता है कौन नहीं ईश्वर है = ॥

२

ईश्वर का घर क्या है जगत का प्रतीक्षण है =
क्या आय समय का गतआगत प्रतीक्षण है =
भोजन क्या करता नीत्य गर्व भक्षण है =
पीता क्या करता सदा पापशोसण है =
उस का स्वभाव कैसा है अतीमृदुतर है =
कहीये कहता है कौन नहीं ईश्वर है =

३

वह सकल ब्रीथ का पालक है भर्ता है = ॥
माया प्रपंच अज्ञान पाप हर्ता है =
वह सत्य नीष्ठ धृती दया धर्म धर्ता है =
सारा जगत का स्वरूप वही कर्ता है =
सुनता दीनों की आर्त नाद सत्वर है =
कहीये कहता है कौन नहीं ईश्वर है =

=दोहा=

॥ वह अवीन्यासी शीव सत्य और सुन्दर है ॥
॥ कहीये कहता है कौन नहीं ईश्वर है ॥

४

वह हीं है हमको मार्ग दीखानेवाला ॥
वह हीं है सच्चा ज्ञान सीखानेवाला ॥
वह हीं है शुभ कर्तव्य बतानेवाला ॥
वह हीं है नीज आनंद जतानेवाला ॥
उसके समान बस वही जगत नटवर है ॥
कहीये कहता है कौन नहीं ईश्वर है ॥

=ईश्वर= उपनीषद् श्वेता० १८७

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं ॥ =
नदेवतानां परमंच दैवतम् ॥ =
पतीं पतीनां परमं परस्ता = ॥ =
द्वीदामदेवं भुवनेशमीड्यम् ॥

उपनीषद् = कठ

एकोवसी सर्वभूतान्तरात्मा
॥ एकंरूपं बहुधा यः करोती =
॥ तमात्मस्थये नुपश्यंती धीर
॥ तेषांसुखं शाश्वतं नेतरेशाम
=पुरुष सुक्त=
सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्र
सहस्त्रपात् = सभूमी ७ स
ब्राह्मणोष्टदशाङ्गयज्ञ

उपनीषद् = कठ = ५

सर्वे वेदाः यत्पद मामनन्
तपांसी सर्वाणीचः यद्वद
यदी छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्
तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमी = ओ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥आरती॥

जय जगदीसहरे=प्रभु=जयजगदीशहरे=॥मायातीतमहेश्वर=मनबचबुद्धीपरे=जयजग
दीअनादीअगोचरः अवीचल=अवीनाशी=प्रभु=अ=॥ अतुल अनंत अनामय=अमीन
शी॥१॥जय=॥अमल अकल अज अक्षय= अव्यय अवीकारी= सत्त चीत सुखमय
ीश सत्ताधारी॥२॥जय=॥ बीधी हरी शंकर गणपती=सुर्य शक्तीरूपा=वीश्वचराचर
म्ही वीश्वभुपा॥३॥जय=॥मातापीतापीतामह=स्वामी सुहृद भर्ता=वीश्वोत्पादक
क=रक्षनकसंहर्ती॥४॥जय=॥साक्षी शरण सखाप्रीय प्रीयतम पुर्ण प्रभो=केवलक
लानीधी कालातीतवीभो॥५॥जय=॥रामकृष्णकरूणामय=प्रेमामृत सागर=मनः
नः मुरलीधरः नीतनवनटनागर॥६॥जय=॥सबबीधीहीनमलीनमतीः हमअतीपातकी
मपद बीमुखअभागीकली=कलुषीत तनमन॥७॥जय=॥आश्रयदान दयाणव=हम
कोरीजै=पापताप हरोहरी सब=नीजजनकरलीजैः॥८॥जय=॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नन्दनन्द कृष्ण श्याम व्रतधारी ॥ बीन गोपाल और जहां भावत ते कहीये कामी वारी = गोप पोट दे
गाइ आनी तुम कृत धो घोष उतारी = ई तनी कदुर जाहुं चलका सी = जाहा बीकत है प्यारी = यह सैन दे
नी लीये तुमारो = अती मंडली अनन्य हमारी = ज्यों रसरीत कही हरी हमसों = सो क्यों जात पीस
ो = महा मुक्ती को उँ नही बाँछे = कृष्ण पदारथ चारी = सुरदास स्वामी मनमोहन = मुरत की
लीहारी = ॥ उधो वेद वचन प्रमान = ॥ कमल मुख पर नयन खंजन = देखीये क्यों जान
~~बीनीकेत समेत सबै गुण = सकल~~ ॥ बीनीकेत समेत सबै गुण = सकल रूप नीधान = अधर सु
धा य बीदुरे = पठये दीनो ज्ञान = दुरन हीदयाल सब घट = कहत एक मय ान = नीके
क्यों कै = गोपाल बोध कृत = सुखनीके दुख जान = रूपरेख नो देखीये = बीन स्वाद स
मान = ईषद्गए अपडारी हरी गुण = गहत पाणी बीषान = बीत राग सुजान योगी =
सीद्धी नीवास = नीगम बाणी मेटकै = क्यों कहै सुरजदास =

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ कैवल्यकुञ्चीका ॥

कैवल्यकुञ्चिकां तात्वं सम्यगव धारय=उद्घाटय कपाटंच बोधरत्नं करेकुरु॥१॥ दृश्यानु
ाऽनुभूत्या वायोयो भावःपरिस्फुरेत्=तंभावमविलम्बेन पञ्चधा राकलीकुरु॥२॥अस्तिभाति
ंरूपंनामचेत्यंरापञ्चकम्आद्यंत्रयंब्रह्मरूपं मायारूपंततोद्वयम्॥३॥नामरूपेतुनैवस्त स्त
तुवदाम्यहम्=नामतुव्यवहारार्थंकल्पितंनतुवास्तवंम्॥४॥ घटोनघोनापिचट स्ता
त्वमाश्रितौ=घःकण्ठयश्चमुर्धन्यस्तावुभावपिनैकदा॥५॥ एवंनामानि सर्वाणि स
वीचारय=घटस्तु पृथिवीरूपं साजडा जलरूपिणी॥६॥ तेजसोजलमुत्पन्नं तद्वायोःस
वः=खादिसर्वंमहद्भारास्तच्चप्रकृतिसम्भवः॥७॥गुणात्मा प्रकृतिर्माया मायामय्ये
तसा=नामरूपेततोनस्तोऽथास्तीत्यादि विचारय॥८॥अस्ति सत्ता भातिचिच्चा
न्दलक्षणम्=सच्चिदानन्दरूपंतत्कैवल्यमवशिष्यते॥९॥ समाधिस्तत्र कर्तव्यः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नुवेधितः=अथ राद्धानुविद्धंतु समाधिं कथयामिते ॥१७॥ नित्य एवास्मि सुद्धो स्मि
निरंतरः=सहजानन्द रूपोस्मि न मे माया न मे मलः ॥१८॥ अस्मिन्नसति सत्ताहि
यार्पिता=उपसंहृत्य सत्तां तां स्व सत्तायामहं स्थितः ॥१९॥ विकृत्या विकृति-
या प्रकृतिर्नच=तथापिज्ञातंमयिचेतर्हि ज्ञातमज्ञातवत् ॥२०॥ उपसंहर वि
तिया वद्धद्राम्यहम्=उपसंहृतमेवेदं दृश्यतेनैव तिष्ठति ॥२१॥ इत्याद्युप
प्रदर्शितयैवचिन्तया=राद्धानुविद्धनामाहि समाधिर्जायतेमुनेः ॥२२॥ अर्थानु वेधित-
राद्धानुवेधितः=तावुभौसम्यग भ्यस्यविरोन्निरनुवेधितम् ॥२३॥ रार्कराद्वितयं धृ-
निरूप्यतेयथा=समाधिद्वितयंधृत्वाप्रणवार्थौपिलिख्यताम् ॥२४॥ पटेप्रणवा
नाद्यकेयथा=समाधिद्वितयं तद्वत्प्रणवार्थपटोरपि ॥२५॥ निर्विकल्पसमाधौनि
नः=कपाटोद्घाटने हेतुरियंकैवल्यकुञ्चिका ॥२६॥ रह
क्तिनांपरमायुक्तीरियंकैवल्यकुञ्चिका=वसिष्ठव्यास
नयैःकरुणारसनिर्भरैः=अर्पितानन्दबोधप्रास्तत्क्रमे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri